TRANSLATION – THEORY & PRACTICE

B.A. HINDI

II SEMESTER

CORE COURSE (2)

(2011 Admission)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

CALICUT UNIVERSITY P.O., MALAPPURAM, KERALA, INDIA-673 635

172

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL

B.A. HINDI

II SEMESTER
CORE COURSE (2)

TRANSLATION- THEORY AND PRACTICE

Prepared by :

Dr. BHARGAVAN.K
Assistant professor
Department of Hindi
Govt.Arts and Science College
Meenchanda, Calicut

©
Reserved

विषय क्रम

Module – 1

Unit - 1 अनुवाद शब्द व्युत्पत्ति एवं अर्थ
Unit - 2 अनुवाद की परिभाषा
Unit - 3 अनुवाद की आवश्यकता
Unit - 4 अनुवाद का महत्व
Unit - 5 अनुवाद - कला, विज्ञान या शिल्प
Unit - 6 अनुवाद की प्रक्रिया
Unit - 7 अनुसृजन
Unit - 8 प्रतीकांतर
Unit - 9 आदर्श अनुवादक के गुण

Module – 2

Unit -10 अनुवाद के प्रकार
Unit -11 शब्दानुवाद
Unit -12 अनुवाद के क्षेत्र
Unit -13 काव्यानुवाद
Unit -14 नाटकानुवाद
Unit -15 मुहावरे - लोकोक्तियाँ
Unit -16 अनुवाद और भाषा विज्ञान
Unit -17 पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद

Module – 3

Unit - 18 पारिभाषिक शब्दावली:अर्थ एवं परिभाषा
Unit - 19 पारिभाषिक शब्द-विषयक विभिन्न संप्रदाय
Unit - 20 पारिभाषिक शब्दावली
Unit - 21 यंत्रानुवाद
Unit - 22 पुनरीक्षण
Unit - 23 भाषान्तरण
Unit - 24 हिन्दी में अनुवाद चिन्तन
Unit - 25 अनुवाद और कंप्यूटर
Unit - 26 अनुवाद में मातृभाषा का प्रयोग

Module – 4

Unit - 27 हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद
Unit - 28 अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

UNIT - 1

अनुवाद शब्दः व्युत्पत्ति एवं अर्थ

अनुवाद का संबंध संस्कृत में 'वद्' धातु से है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या कहना। 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है, इसका अर्थ हुआ कहने की क्रिया या 'कही हुई बात'। 'वाद्' शब्द में पीछे, बाद में, अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुडने से 'अनुवाद' शब्द निष्पन्न होता है। इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय है- 'किसी कही हुई बात के बाद कहना', 'पुन : कथन', किसी के कहने के बाद कहना' आदि। अनुवाद की रचना प्रक्रिया केलिए छाया, टीका, भाषानुवाद, तर्जुमा तथा उल्था आदि शब्द प्रचलित हैं।

'शब्दार्थ चिन्तामणि कोश' में अनुवाद का अर्थ 'प्राप्तस्य पुनः कथनें' या 'ज्ञातार्थस्य प्रति पादने र्थात्' पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना या प्रतिपादन करना आदि दिया गया।

'अनुवाद' से मिलता-जुलता एक अन्य शब्द 'अनुवाक्' भी संस्कृत में उपलब्ध है। वैदिक साहित्य में यह प्रयुक्त होता था । परंतु बाद में अनुवाक् का प्रयोग वेद के किसी अनुभाग के रूप में होने लगा। प्राचीन भारत में शिक्षा की मौलिक परंपरा प्रचलित थी, गुरु जो कुछ कहते थे, शिष्य उसे दुहराते थे। इस दुहराने को ही अनुवाद और अनुवाक् शब्द से जाना जाता था। उपनिषदों में भी अनुवाद शब्द दुहराने के अर्थ में ही प्राप्त होता है। भारतीय दर्शन-ग्रन्थों में भी अनुवाद शब्द का प्रयोग मिलता है। 'न्याय' और 'मीमांसा' दर्शन में – "पहले से कही गई किसी बात के समर्थन में कहे गए दूसरे वचन को अथवा एक ही बात की आधिक व स्पष्ट रूप में पुनः व्याख्या अनुवाद कहा जाता था।"

अनुवाद शब्द का प्रयोग प्राचीन काल में संस्कृत भाषा में ठीक उसी अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता था जिस अर्थ में आजकल हिंदी में हो रहा है। संस्कृत में कहीं-कहीं भाषानुवाद जैसा प्रयोग भी मिलता है - जिसका अर्थ है - बोलचाल की भाषा में की गई टीका या व्याख्या। जहाँ-जहाँ भावानुवाद भाषांतर के रूप में हुआ करते थे वे सब अनुवाद के आजकल के अभिप्राय के अधिक निकट है। अनुवाद का प्रयोग आजकल हिंदी में जिस अर्थ में चल रहा है उससे यह आशय है – 'एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना।' इसे भाषांतरण भी कह सकते हैं। इस अर्थ में ' उलथा' और 'तरजुमा' शब्द भी प्रचलित हैं।

अनुवाद शब्द अंग्रेज़ी के Translation का हिंदी पर्याय के रूप में प्रचलित है जिसका अर्थ है एक भाषा से दूसरी भाषा में भाव- विचार को ले जाना। इस से यह स्पष्ट हो जाता है कि मूल भाव विचार को दूसरी भाषा में उसके स्वभाव और प्रकृति के अनुसार अंतरित करना अनुवाद है।

UNIT - 2

अनुवाद की परिभाषा

एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतरित करने को अनुवाद कहलाता है । इस तरह अनुवाद का कार्य है एक (स्रोत) भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में व्यक्त करना। अनुवाद करना एक कला है, सबसे सुंदर अनुवाद वही माना जाएगा ,जिसमें मूल कृति का भाव तो आ ही जाए, साथ ही साथ अनुवाद को पढते समय मूल के पढने जैसा आनंद भी प्राप्त हो । लेकिन स्त्रोतभाषा की किसी अभिव्यक्ति का पूर्णतः समान अभिव्यक्ति लक्ष्यभाषा में पाना कठिन कार्य है । इसका कारण यह है कि स्त्रोतभाषा से जो अर्थ व्यक्त होता है, वह लक्ष्यभाषा की अभिव्यक्ति से व्यक्त होने वाले अर्थ की तुलना में कभी विस्तृत होता है, कभी संकुचित होता है या कुछ भिन्न होता है । साथ ही उन भाषाओं में अभिव्यक्त इकाईयों का साहचर्य अर्थ भी भिन्न-भिन्न होता है। इसलिए दोनों भाषाओं में अर्थ और अभिव्यक्ति पक्ष (शैली) में निकट समानता की खोज करनी पडती है। समानता की निकटता जितनी अधिक होती है, अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल हो जाता है । इन बातों को दृष्टि में रखकर डॉ.भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी है – 'एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।'

भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अनुवाद की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी है । प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान यूजीन.ए.नइडा ने लिखा है – "Translating Consists in producing in the receptor language the closet natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style" (अर्थात - अनुवाद स्रोतपाठ का संदेश पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम स्वाभाविक तथा तुलनार्थक आदान प्रस्तुत करता है । भाषा वैज्ञानिक जे.सी.केटफोर्ट ने अनुवाद की व्याख्या की है –"अनुवाद स्रोतभाषा की पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन करना है" (The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language)

अनुवाद में अर्थ संप्रेक्षण की प्रक्रिया पर ज़ोर देकर डॉ.जॉनसन ने अनुवाद की परिभाषा दी है – "अनुवाद का तात्पर्य यह है कि अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।" आधुनिक विचारक ए.एच.स्मिथ के अनुसार इस परिभाषा को इस तरह से परिवर्तित करना आवश्यक है "अनुवाद का तात्पर्य यह है यथासंभव अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।" उनके अनुसार यह संशोधन इसलिए आवश्यक है कि सभी प्रकार के अनुवाद में मूल के प्रभाव का कुछ अंश नष्ट हो जाने की संभावना रहती है । हम्बोल्ट के अनुसार – "All translations seems to me simply an attempt to solve an unsolvable problem" - अर्थात एक असामधेय कार्य का समाधान ढूँढने का प्रयास ही अनुवाद है ।

फोरेस्टेन ने अनुवाद को इस प्रकार परिभाषित किया है - "Translation is the transference of the content of a text from one language in to another, bearing in mind that we can not always dissociate the contant from the form" अर्थात अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में पाठ के कथ्य का अंतरण है, यह ध्यान में रखते हुए कि कथ्य को रूप से सदैव अलग नहीं किया जा सकता । एडवर्ड फिटजेरालड ने कहा- यदि अनुवादक मूल के सौदर्य को सुरक्षित न रख सके तो कम से कम उस पर अपने

जीवन की कुरूपता को तो आरोपित न करे। अनुवाद यथासंभव सजीव तो होना ही चाहिए । भूखे भरे गिद्ध की अपेक्षा जीवित गौरैया कहीं बेहतर है । डोरस्टर्ट के अनुसार 'अनुवाद प्रायोगिक भाषा विज्ञान की वह शाखा है, जिसका संबंध प्रतीकों के एक सुनिश्चित समुच्चय से दूसरे समुच्चय में अर्थ के अंतरण से है।'

डॉ.अश्वघोष ने कहा – 'किसी रचना की विषय-वस्तु को अपने ढंग से,थोडे-बहुत परिवर्तन अथवा परिवर्धन के साथ, प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है।' उसी प्रकार कमलेश की दृष्टि में 'अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में व्याकरणगत कार्बन-कापी है'। कुछ ऐसे भी लोग होते है जो अनुवाद को टीका-टिप्पणी या व्याख्या मानते है।' रूसी लेखिका मेदनिकोवा के अनुसार- "अनुवाद एक तरह से टीका-टिप्पणी करना है"। डॉ. जी.गोपिनाथन ने अनुवाद की व्याख्या इस प्रकार दी है- "अनुवाद वह द्वद्वात्मक प्रक्रिया है, जिसमें स्रोतपाठ के अर्थसंरचना (आत्मा) का लक्ष्यपाठ की शैलीगत संरचना (शरीर) द्वारा प्रतिस्थापन है । "

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अनुवाद में दो भाषाओं की अनिवार्यता है । दूसरा भावों और विचारों में समानता हो और यह समानता स्रोत भाषा के समतुल्य पर्यायों के लक्ष्य भाषा में उपलब्ध होने पर ही हो सकती है । इस आधार पर देखे तो अनुवाद की परिभाषा होगी एक भाषा में व्यक्त भावों या विचारों को दूसरी भाषा में समतुल्यता के आधार पर सहज रूप से अभिव्यक्त करना अनुवाद है ।

UNIT - 3

अनुवाद की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक एवं बुद्धिजीवी प्राणी है। वह सदा अपने परिवेश को देखता रहता है और परिवेश उसको देखने की क्षमता के अनुसार दीर्घतर होता जाता है। इसलिए वह अपने परिचित समाज से निकलकर अपरिचित समाज में पहूँच जाता है, जहाँ का वातावरण पूर्णतः भिन्न रहता है। भाषा, बोली, रहन-सहन, आचार-विचार रीति-रिवाज़, जल- वायु आदि सभी कुछ उससे अलग रहती है। इसलिए मनुष्य उसमें अपने को मिलाने का प्रयास करता है। यही प्रयास वास्तव में उसकी जिज्ञास शक्ति का साधन ही सबसे पहली बात मनुष्य की अपनी बोली और भाषा से ही है। यह सत्य है कि- चार कोस पर पानी बदले : आठ कोस पर बानी'। इस सिद्धान्त के आधार पर मनुष्य को दूसरे की बोली जानने के लिए अनुवाद का सहारा लेना पडता है। अनुवाद से हम विश्व की सभी भाषाओं से निकट का परिचय प्राप्त कर लेते है, और उसमें अपने-आपको आत्मसात कर देते है। अनुवाद हमारी बौद्धिक क्षुधा को शान्ति कर दूसरी भाषा को अपने में लाने का मार्ग प्रशस्त करता है। असल में किसी भी देश की अबाध्य परिवर्तनीय सांस्कृतिक परम्पराओं एवं साहित्यक गति विधियों से परिचय प्राप्त करने के लिए हमें अनुवाद की आवश्यकता होती है।

UNIT - 4

अनुवाद का महत्व

अनुवाद आज विश्व केलिए अनिवार्य अंग बन चुका है । संपूर्ण विश्व में बुद्धि और हृदय की भूख को संतुष्ट करने केलिए ज्ञान और भावानुभूतियों के आदान-प्रदान की पर्याप्त ज़रूरत है । यह सब बहुत बडे स्तर पर हो रहा है । विश्व में किसी भी देश की भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान, विज्ञान,शास्त्र,साहित्य और कला आदि भंडार को दूसरे देश की भाषाओं में अनूदित करके उपलब्ध कराया जा रहा है । इसी प्रकार एक ही देश के विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं में प्राप्त ज्ञान के भंडार को अन्य अनेक प्रदेश की भाषाओं में उपलब्ध करना अनुवाद के द्वारा ही संभव हुआ है । इस प्रकार एक भाषा से दूसरी भाषा के बीच की दूरियाँ कम होती जा रही है । प्रत्येक भाषा अपने आपको अधिक समृद्ध और विकसित कराने की होड में लगी हुई है । इसका परिणाम यह है कि जो भाषाएँ अधिक महत्वपूर्ण है, उनसे दूसरी भाषाओं में अनुवाद का कार्य अनिवार्य हो गया है ।

यह धारणा रही है कि प्राचीन भारत में विशेषकर संस्कृत में अनुवाद होते ही नहीं थे । विद्वानों का मानना है कि यह विचार उचित नहीं है, क्योंकि भारत जैसे प्रबुद्ध देश ने ज्योतिष, वास्तुकला तथा चिकित्सा आदि के क्षेत्र में जो कुछ भी उचित ज्ञान पाया उसे अवश्य ही दूसरों से ग्रहण किया। प्राकृतों से संस्कृत अनुवाद के उदाहरण आज भी प्राप्त है । संस्कृत नाटकों में स्त्रियों तथा नौकरों के प्राकृत वाक्यों, छंदों या गीतों आदि को प्राकृत के साथ-साथ संस्कृत में भी देने की प्रथा रही है । इसे संस्कृत में छाया कहते हैं। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल में १४ वीं १५ वीं शती से ही ज्योतिष, वैद्यक, नीति, कथावर्ता आदि विषयों के संस्कृत ग्रन्थों के हिंदी आदि भाषाओं में अनुवाद होने लगे थे । इन्हें भाषा ठीका कहते हैं । यहाँ 'भाषा' में अभिप्राय बोलचाल की भाषा अर्थात हिंदी से है और ठीका का आशय है, अनुवाद ।

आजकल यह स्पष्ट है कि अनुवाद कार्य के बिना मनुष्यता का विकास कठिन हो जाता है । संसार का कोई भी देश अथवा कोई भी भाषा ज्ञान और विद्या का एकमात्र स्रोत और भंडार है यह असंभव की बात है इसलिए प्रत्येक उदारवादी दृष्टिकोण के व्यक्ति केलिए अनुवाद के माध्यम से अपनी चेतना का विकास करना आवश्यक हो गया है । अनुवाद के संदर्भ में विदेश की बात देखे, उसकी परंपरा बहुत प्राचीन है । ग्रीक भाषा में लिखी गई सुकरात,प्लेटो और अरस्तु आदि की रचनाएं एशिया की अनेक भाषाओं में अनूदित होकर ज्ञान-विज्ञान,कला-संस्कृति का विकास करती रही है । भारतीय रचनाएं पहले अरबी और बाद में यूरोपीय भाषाओं में अनूदित होकर ज्ञान-विज्ञान के आदान-प्रदान में योगदान देती रही हैं ।

यह स्वाभाविक सत्य है कि किसी व्यक्ति बहुत सी भाषाओं से पारंगत हो सकता है। किंतु उसे सभी भाषाओं और उनमें प्राप्त सभी प्रकार के अधुनातन ज्ञान-विज्ञान की जानकारी और विशेषता प्राप्त हो, यह संभव नहीं । ऐसी स्थिति में अनुवाद की आवश्यकता और भी बढ जाती है । आधुनिक विकसित युग में वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर आदि के विस्तृत ज्ञान का भंडार आज भी अंग्रेज़ी आदि विदेशी भाषाओं में सुरक्षित है । भारत में यदि इनका अधुनातन ज्ञान सर्व जनसुलभ कराना है तो इन्हें हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में अनूदित करना पडेगा । अनुवाद कार्य तो अधिक परिश्रम और विशेषज्ञता रखता है । अनुवादक का उद्देश्य मूल के संदेश को भी समान रूप से संप्रेक्षित करना होता है । उसको मूल लेखक की मनोभूमि तक पहुचना पडता है । इसी संदर्भ में अनुवाद को एक प्रकार की सर्जनात्मक कला भी कहा जाता है । इससे स्पष्ट है कि अनुवाद कार्य किसी भी अर्थ में कम महत्वपूर्ण नहीं है । वस्तुस्थिति तो यह है कि आज विश्व के समक्ष अपने-अपने अस्तित्व को बनाए रखने और व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व में निरंतर विकास करने के लिए अनुवाद एकमात्र साधन है ।

UNIT - 5

अनुवाद – कला, विज्ञान या शिल्प

अनुवाद के अंतरंग तत्वों पर विचार करते हुए विद्धानों ने अनुवाद की प्रकृति पर खूब विचार किया है। प्राचीन काल से ही लोग अनुवाद को कला मानते आये है, लेकिन आधुनिक काल में विचारकों ने अनुवाद को विज्ञान माना है। कुछ ऐसे भी विद्धान है जो अनुवाद को शिल्प या कौशल मानते है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में अनुवाद अंशतः शिल्प है, अंशतःविज्ञान है और अंशतःकला है।

अनुवाद विज्ञान के रूप में

Science is a fact it will not change

Eg:- A= B, B=C, So A = C

किसी भी विषय का व्यवस्थित तथा विशिष्ट ज्ञान विज्ञान होता। यदि किसी विषय का व्यवस्थित वैज्ञानिक. विवेचना किया जाता है तो वह अध्ययन विज्ञान की सीमा में आ जाता है। उसमें विकल्प की गुंजाईश नहीं होती। अनुवाद भी एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें आद्यंत कुछ निश्चित नियमों को मानकर चलना पडता है। अनुवादक को तटस्थ होकर सत्य निष्टता के साथ अंध भक्ति से बचकर अनुवाद करना चाहिए । जिस प्रकार एक वैज्ञानिक रासायनिक वस्तुओं का ठीक माप तौल लेकर और अन्य उसे उपकरणों द्वारा वैज्ञानिक सत्य की जाँच करता है, उसी प्रकार स्त्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को ठीक समझने और संप्रेषण करने केलिए अनुवादक को कोश व्याकरण आदि उपकरणों का सहारा लेना पडता है । वास्तविक अनुवाद करने के पूर्व की चिंतन प्रक्रिया असल में वैज्ञानिक प्रक्रिया है । तुलना के आधार पर ही स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनि , शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ संबंधित समानताऐं ज्ञात करते हैं ।

असमानताओं की समस्या सुलझाने केलिए निश्चित नियमों का अनुसरण करते है। इस तरह वास्तविक अनुवाद करने की पूर्व पीठिका जो अनुवादक के मस्तिष्क में चिन्तन के रूप में होती है, वह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। अनुवाद में जो छूट जानेवाली कडियाँ होती है, उनको ठीक करने के लिए अनुवादक को कई बार मूल के साथ अपने अनुवाद का मिलान करना पडेगा। छूटी कडी की यह खोज एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। अनुवाद में श्ब्दों का नपा तुला प्रयोग होता है, जिस से अर्थ का भार ज्यादा या कम न पडे। अनुवाद की वस्तुनिष्ठता और प्रमाणिकता उसे एक वैज्ञानिक प्रक्रिया सिद्ध करते है।

अनुवाद कला के रूप में

कला का सम्बन्ध प्रतिभा से है। यह प्रतिभा जन्म जात प्रतिभा से जुडी हुई है। साहित्यकार सृजन करता है। सभी लोग सृजन नहीं कर पायेंगे। लेकिन अनुवादक पहले की सृष्टि को आत्मसाथ करके और एक भाषा में अनुवाद करता है। साहित्य सर्जना है तो अनुवाद पुनसर्जना है। - 'Literature is creation, but translation is recreation.'

किसी ने कहा है – 'साहित्यकार बिना रस्सी में नाचनेवाला बन्दर है तो अनुवादक बन्ध रस्सी में नाचनेवाला बन्दर है।'

कलाएँ एक प्रकार की सर्जन है। व्यक्ति में प्राय : यह सहज अधिक है। केवल अभ्यास या प्रशिक्षण से कोई कलाकार नहीं बन सकता। कला में व्यक्ति आत्माभिव्यक्ति करता है। उसका व्यक्तित्व उसमें आ जाता है। अनुवाद में सहज समतुल्यता की खोज होती है। इसलिए अनुवादक को पुनः सृजन करना पडता है। इस पुनः सृजन में अनुवादक की कल्पना और सहज ज्ञान का बडा हाथ रहता है अनुवादक का भी एक व्यक्तित्व होता है और उसकी भी एक शैली होती है । इसी कारण अनूदित रचना एक मौलिक कृति के समान बन जाती है। मूल सामग्री के दो अनुवादकों द्वारा किये गये अनुवाद भिन्न होने के कारण यहीं है।

अनुवादक मूल के भावों को अच्छी तरह समझकर उसे लक्ष्य भाषा में ढालता है। इसी कलात्मकता के कारण हर व्यक्ति केवल योग्यता और अभ्यास से अच्छा अनुवादक नहीं बन सकता। इस प्रकार मूल कृति की आत्मा को अनुवाद में उतारने का काम स्वयं एक कला है। लक्ष्य भाषा के शब्दों और पर्यायों का चुनाव अनुवादक के सैन्दर्य बोध एवं व्यक्ति पर निर्भर है, इसके अतिरिक्त अनुवाद की मूलप्रेरणा भी कविता या चित्ररचना की प्रेरणा के समान होती है।

अनुवाद शिल्प के रूप में

शिल्प अभ्यास और शिक्षण के द्वारा अर्जित किया जा सकता है। वातावरण और अभ्यास से कोई भी शिल्पी बन सकता है। शिल्प में शिल्पी आत्माभिव्यक्ति नहीं करता है और उनका व्यक्तित्व भी उसमें नहीं आता है। आजकल पत्रकारिता, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि का अनुवाद यांत्रिक तत्परता से करना पडता है। ऐसा आनुवाद एक शिल्प ही हो सकता है अच्छे अनुवादकों को छोड दे, तो काफी अनुवादक-अनुवाद भी करते हैं, लेकिन उनके अनुवाद की उपलब्धि शिल्प से आगे नहीं योग्यता, अभ्यास, वातावरण, आदि से व्यक्ति इस प्रकार का अनुवादक बन सकता है। इसके लिए सहज प्रतिभा की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार का अनुवाद पुन सृजन नहीं होता।

हर अनुवाद में एक सीमा तक शिल्प तथा कला दोनों आवश्यक है। किसी भी अनुवाद को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसमें कला का अंश कितना है या यह केवल एक शिल्पी की कृति है। केवल तथ्यों से युक्त और विज्ञान जैसे विषयों के अनुवाद, (जिसमें अभिव्यक्ति का महत्व नहीं है) के साथ शिल्पी न्याय कर लेगा। लेकिन कविता, उपन्यास आदि भाव प्रधान विषयों का अनुवाद कलापरक है और कलाकार भी उसके साथ न्याय कर लेगा। इस प्रकार अनुवाद को विज्ञान, कला एवं शिल्प तीनों माना जा सकता है। डॉ. जी.गोपिनाथन जैसे विद्वानों ने अनुवाद को एक वैज्ञानिक कला माना है संक्षेप में यह कह सकते हैं कि पृष्ठभूमि का विज्ञान पक्ष और प्रयोग ही कलाधर्मिता मिलकर अनुवाद को एक वैज्ञानिक कला बना देते है।

UNIT - 6

अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद करने की प्रक्रिया के संबंध में विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत प्रकट किये गये है । नाइडा आदि ने इसके तीन चरण माने हैं - पाठ विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन । कुछ रूसी विचारकों के अनुसार चार चरण है । डा. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की प्रक्रिया के पाँच चरण माने हैं। उनका कहना है कि अनुवादक को इन पाँचों चरणों से गुज़रना पडता है । ये पाँच चरण हैं-

१. पाठ पठन

सबसे पहले अनुभव को मूल सामग्री का अच्छी तरह अध्ययन करना होता है । इस संबंध में भाषा और विषय दोनों को भली भाँति समझने की आवश्यकता है । यदि भाषा कठिन है तो अनुवादक को भाषा के अच्छे जानकार या कोश आदि की सहायता लेनी चाहिए । विषय की दुरूहता के कारण यदि पाठ समझ में नहीं आता तो इस केलिए विषय के जानकार या विषय के प्रामाणिक पुस्तक से सहायता की जा सकती है । भाषिक (भाषा परक) एवं विषय परक अर्थ समझने केलिए काल, देश, लिंग वचन प्रसंग आदि बातों का विचार आवश्यक करना चाहिए। जो अर्थ निर्धारण केलिए आवश्यक माने जाते हैं।

२. पाठ विश्लेषण

अनुवाद की प्रक्रिया के इस दूसरे चरण में अनुवादक को मूलपाठ का विशलेषण करना होता है । विश्लेषण भी इस बात पर दिया जाना चाहिए कि कहाँ शब्द का अनुवाद करना है । कहाँ पदबधं का , कहाँ उपवाक्य का और कहाँ एक वाक्य को एकाधिक वाक्यों में तोडकर अनुवाद करना है, तथा कहाँ एकाधिक वाक्यों को एक वाक्य में मिलाकर अनुवाद करना है । कबी-कभी प्रोक्तिस्तरीय अनुवाद की भी आवश्यकता पड सकती है ।

3.भाषांतरण

इस तीसरे चरण में पाठ विश्लेषण के आधार पर विभक्त स्त्रोत भाषा की इकाइयों का लक्ष्य भाषा की इकाइयों में अंतरण करते हैं । इसमें कभी शब्द-शब्द, पदबंध-पदबंध, उपवाक्य-उपवाक्य, वाक्य-वाक्य अंतरण होता है (कभी छोटीं इकाई - बडी इकाई)। जैसे - उपवाक्य-वाक्य का अनुवाद होता है और कभी बडी इकाई-छोटी इकाई जैस`- वाक्य-उपवाक्य, बडी इकाई - छोटी-इकाई (जैसे पदबंध -उपवाक्य) का अंतरण होता है।

4. समयोजना

इस चरण में अनुदिन पाठ का लक्ष्य भाषा की दृष्टि से समयोजना करता है । इस समयोजना में हमारा ध्यान तीन बातों पर हो जाना आवश्यक है ।

१. भाषा में सहज प्रवाह हो।

२. स्त्रोत भाषा का छाया न हो।

३. अर्थ स्पष्ट हो ।

यहाँ भाषा परक और विषयपरक दोनों प्रकार की अर्थ स्पष्टता आवश्यक है।

5. मूल से तुलना

स्त्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में अंतरण करने के बाद अनुवादक को उसे एक बार मूल से तुलना कर देनी चाहिए । यहाँ देखने की बात यह है कि अनूदित सामग्रि अर्थादेश, अर्थ संकोच और अर्थ विस्तार जैसे दोषों से मुक्त हो तथा उसकी भाषा शैली भी मूल के अनुरूप हो । इन पाँचों चरणों से गुजरने पर ही अनुवाद की प्रक्रिया संपूर्ण हो जाती है और अनुवाद सफल अनुवाद हो जाता है ।

UNIT - 7

अनुसृजन (Transcreation)

सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में, खासकर पद्य के अनुवाद में भावात्मक अनुवाद की प्रक्रिया अपनाई जाती है । अच्छे कवि ही कविता का सफल अनुवाद कविता में कर सकते हैं । वे भावात्मक अनुवाद से एक कदम आगे बढते हैं । वे मूल कवि का भाव ग्रहण करने के बाद उसके आधार पर अपनी ही कविता का प्रणयन करते हैं । इसे अनुसृजन कहा जाता है । मूल कविता का सृजन होने के पश्चात अनुवादक फिर से उसका सृजन अपनी भाषा में करता है । अनुसृजन में अनुवादक की प्रतिभा और उसका भाव अनुवाद में दिखाई देता है । अनुसृजन करते समय अनुवादक मूल रचना के क्रम आदि में कुछ परिवर्तन, काट-छांट आदि कर सकते हैं। अनुसृजन केलिए सबसे अच्छा उदाहरण फिट्जेराल्ट कृत उमरखैयाम के रूबाइयात का अनुवाद है । फिट्जेराल्ड जैसे अनुवादक का अनुसृजन मूल कविता को गरिमा पहुँचाता है । आजकल साहित्यानुवाद के क्षेत्र में अनुसृजन बहुत ही प्रचलित है, इसलिए अनुवादक इस शब्द को अधिक पसंद करते हैं।

प्रतिअनुवादक (पुनःअनुवाद)

एक भाषा से दूसरी भाषा में कोई सामग्री जब अनूदित हो जाती है, तब स्वाभाविक रूप से लक्ष्य भाषा के तत्व अनुवाद में संक्रमित हो जाते हैं। इस अनुवाद के सही होने की परीक्षा लेने केलिए दोनों भाषाओं के जानकर व्यक्ति से समर्थन लेता है । इनका और एक उपाय पुनःअनुवाद (Retranslation) लक्ष्यभाषा में अनूदित सामग्री को अन्य किसी व्यक्ति से स्रोतभाषा में अनूदित कराना । इसके पश्चात स्रोतभाषा की सामग्री से उसे मिलाकर देखना । यह अवश्य है दोनों सामग्रियाँ अभिन्न नहीं रहेगी । दोनों में करीब-करीब मेल हो तो वह अनुवाद सफल माना जाएगा ।

UNIT - 8

प्रतीकांतर

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद या भाषांतर को प्रतीकांतर का एक भेद माना है । उनका कहना है कि हम अपने विचारों को किसी न किसी प्रकार के प्रतीक के द्वारा ही दूसरों के सम्मुख व्यक्त करते हैं । भाषा में ये प्रतीक शब्द होते हैं। इसी तरह चित्रकला, संगीतकला, नृत्य कला आदि में भी भावों या विचारों की अभिव्यक्ति केलिए तरह तरह के प्रतीकों का प्रयोग होता है । इन प्रतीकों का परिवर्तन ही प्रतीकांतर है । संक्षेप में कहे तो एक प्रतीक (या प्रतीक वर्ग) द्वारा व्यक्त विचार (या विचारों) को दूसरे प्रतीक (या प्रतीक वर्ग) द्वारा व्यक्त करना प्रतीकांतर है ।

प्रतीकांतर तीन प्रकार के होते हैं -

शब्दांतर : - किसी भाषा में व्यक्त विचार को उसी भाषा में दूसरे शब्दों में व्यक्त करना शब्दांतर या श्ब्द प्रतीकांतर है । इसमें भाषा वही रहती है, केवल एक शब्द प्रतीक या प्रतीकों के स्थान पर दूसरे शब्द प्रतीक का प्रतीकों का प्रयोग लिया जाता है । 'श्रीमन बैठिए' का शब्दांतर है 'जनाब आली तशरीफ रखिए।'

माध्यमांतर : - एक माध्यम के प्रतीकों के स्थान पर दूसरे माध्यम के प्रतीकों का प्रयोग ही माध्यमांतर है । उदाहरण केलिए कोई व्यक्ति हाथ के संकेत से किसी को अपने पास बुला रहा है । बुलाए जानेवाले व्यक्ति ने देखा नहीं । अत : बुलाने वाले ने ज़ोर से कहा, इधर आओ । संकेत के प्रतीक के स्थान पर भाषा के प्रतीकों के प्रयोग ही माध्यमांतर है । एक कवि जो भाव एक कविता में व्यक्त करना, चित्रकार उसी भाव को चित्र में तथा संगीतकार उसी को संगीत के द्वारा व्यक्त करना माध्यमांतर है ।

भाषांतर :- एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना भाषांतर है। इसी को अनुवाद या तर्जुमा भी कहते हैं ।

इस प्रकार अनुवाद प्रतीकांतर का एक भेद है । इसमें एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के प्रतीकों का प्रयोग करते हैं।

UNIT - 9

आदर्श अनुवादक के गुण

अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक का काफी महत्वपूर्ण योगदान है । एक आदर्श अनुवादक केलिए कई बातों पर ध्यान देना आवस्यक है । हर भाषा की भावानुभूति या पकड अलग-अलग होती है । इसलिए अनुवादक को उसमें सतर्क रहना चाहिए। वह केवल दो भाषाओं का ही दूत न होता है, वरन् दो जनताओं और संस्कृतियों का भी दूत होता है । अच्छे अनुवादक केलिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है –

1. स्रोत भाषा का ज्ञान
2. लक्ष्यभाषा का पूर्ण ज्ञान
3. विषय का ज्ञान

एक आदर्श अनुवादक का पहला गुण है उसको स्रोत भाषा का अच्छा ज्ञान होना । स्रोत भाषा का पर्याप्त ज्ञान भी कई प्रकार का हो सकता है । यदि स्रोत भाषा में कोई पुस्तक सूचना परक साहित्य की हो तो वहाँ स्रोत भाषा के सामान्य ज्ञान से काम चल सकता है । किंतु यदि वह कोई कविता पुस्तक है या उपन्यास है, जिसमें आँचलिकता का पुट है तो फिर भाषा का सूक्ष्म ज्ञान होना आवश्यक है । इसका यह अर्थ नहीं है कि अनुवादक को स्रोत भाषा का सामान्य ज्ञान है । उसे मूल सामग्री के स्तर का भी ज्ञान होना चाहिए, जिसे पढकर अच्छी तरह समझने या रसास्वादन करने वाले मूल भाषा-भाषी को होता है । ज्ञान उस स्तर से जितना ही कम होगा उतनी ही त्रुटि होने की संभावना बनी रहेगी ।

अनुवादक का दूसरा गुण है लक्ष्य भाषा का विषय के अनुरूप समुचित ज्ञान। तात्पर्य यह है कि उतना ही ज्ञान जितना लक्ष्य भाषा-भाषी को उस विषय में ठीक अभिव्यक्ति केलिए अपेक्षित है । यह ज्ञान भी जितना कम होगा अनुवाद के उतने ही त्रुटिपूर्ण होने की संभावना बढ जाएगी ।

अनुवादक का तीसरा गुण है विषय का ज्ञान । विषय के ठीक ज्ञान के बिना अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर बैठता है । वास्तव में यह ज्ञान कम से कम उस स्तर का तो होना चाहिए जिस स्तर की अनूद्य सामग्री है । विज्ञान, टकनोलजी जैसे विशिष्ट विषयों में यह बहुत अनिवार्य है । वैज्ञानिक अनुवाद में अनुवादक का एक प्रकार से वैज्ञानिक होना आवश्यक है । साहित्य अनुवाद में मूल रचना के सार का प्रभाव आवश्यक है । यहाँ अनुवादक को मूल के पात्रों एवं घटनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किये गये भावों से पूर्ण रूप से परिचित होता है । मूल कृति के शिल्प विधान तथा तकनीक के विषय में भी अनुवादक का जानकार होना अनिवार्य है । आदर्श अनुवादक मूल विषय का अर्थ स्पष्ट समझने केलिए शब्द कोश का सहारा ले सकता है । विषय के जानकार और विशेषज्ञों से शंका निवारण भी कर ले सकता है ।

अच्छे अनुवादक के लिए यह भी अपेक्षित है कि मूल लेखक के साथ सहानुभूति । अनुवाद की सभ्यता में इसका बडा महत्व होती है । यद्यपि अनुवादक केलिए तटस्थता आवश्यक है, लेकिन मूल लेखक के प्रति श्रद्धा का भाव भी आवश्यक है । कभी तो ऐसा भी होता है कि अनुवादक मूल सामग्री तो लेते हैं, लेकिन मूल लेखक उपेक्षित सा रह जाता है । अनुवादक को सबसे पहले मौलिक रचना का प्रभाव ग्रहण करना है और अपने को मूल लेखक के व्यक्तित्व में खो देना है । वैज्ञानिक अनुवाद में एक सीमा तक विषय का ज्ञान पर्याप्त है लेकिन कविता उपन्यास जैसे साहित्यिक विधाओं के अनुवाद में मूल लेखक के विचारों के साथ सहानुभूति और समभावना बहुत ही आवश्यक है । ऐसे स्थानों पर अनुवादक मूल लेखक आत्मा के साथ एकाकार हो जाता है । इस प्रकार यह बात सुनिश्चित कर लेनी चाहिए कि अनुवादक को स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषा का पर्याप्त ज्ञान हो, दोनों भाषाओं की निजी प्रकृति, व्याकरणिक नियमावली और संरचना प्रविधि से सुपरिचित अनुवादक ही मूल लेखक से लक्ष्य भाषा के पाठकों का तादात्म्य करा सकता है ।

1. स्रोतभाषा किसे कहते है ?

जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है अर्थात मूल रचना जिस भाषा में है उस भाषा को स्रोतभाषा कहते हैं। अंग्रेज़ी में उसे सोर्स लांगवेज (Source Language) कहते हैं।

2. लक्ष्यभाषा से क्या तात्पर्य है ?

जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्यभाषा कहते हैं। उसे प्रस्तुत भाषा भी कहते हैं। इसकेलिए प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द है टार्जेट लान्ग्वेज (Target Language).

3. सफल अनुवादक कौन है?

जो मूल लेखक की भावभूमि को हृदयंगम करके समग्रता और उदारता के साथ उसके भावों को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर सके, उसे सफल अनुवादक कहते हैं। जिस प्रकार मौलिक रचना के लिए प्रतिभा अपेक्षित है उसी प्रकार आदर्श अनुवाद केलिए भी प्रतिभा अपेक्षित है।

4. छाया किसे कहते हैं?

संस्कृत नाटकों में छाया शब्द का पुराना प्रयोग मिलता है । उनमें स्त्री पात्र तथा सेवक आदि प्राकृत वाक्यों, छंदों या गीतों आदि भाषा प्रयोग करते हैं, किंतु पुस्तकों में प्राकृत कथन या छंद के साथ उसकी संस्कृत छाया भी रहती है ।

5. वाक्य-प्रति-वाक्य अनुवाद क्या है

स्रोतभाषा से लक्ष्य भाषा में सहज रूप में भाषा केलिए वाक्य अनुवाद नहीं किए जा सकते किंतु कोई अनुवादक यदि वाक्य केलिए वाक्य अनुवाद करे तो उस शब्दानुवाद को वाक्य-प्रति-वाक्य अनुवाद कहा जाता है ।

6. प्रति लेखन से क्या अभिप्राय है?

स्रोतभाषा के शब्द की वर्तनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को आधार मानकर लक्ष्य भाषा में उस उच्चारण के अनुरूप लिखने को प्रतिलेखन या Transcription कहते हैं। उदाहरण केलिए Roussean का स्रोतभाषा में उच्चारण शउस्सेअउ न होकर रूसो जैसा है, अत : हिंदी में उसे रूसो लिखना ।

UNIT - 10

अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के कई भेद और प्रकार हो सकते हैं। विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से अनुवाद के प्रकारों पर विचार किया गया है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने प्रमुख रूप से चार आधारों पर अनुवाद के भेदों या प्रकारों पर विचार किया है। जो इस प्रकार है - गद्यत्व-पद्यत्व, साहित्यिक विधा, विषय तथा अनुवाद की प्रकृति। लेकिन डॉ एन.इ.विश्वनाथ अय्यर ने अनुवाद के प्रकार माध्यम, प्रक्रिया, और पाठ के आधार पर माना है। इन विद्वानों ने प्रत्येक के विभिन्न उपभेद भी माने हैं। डॉ.जी.गोपिनाथनजी ने विषय वस्तु एवं प्रकृति की दृष्टि से अनुवाद का वर्गीकरण किया है। ये भेद और उपभेद लगभग एक ही प्रकार के लगते हैं। फिर भी सरलता को दृष्टि में रखकर गोपिनाथनजी के द्वारा किये गये भेदोपभेदों पर विचार करना ज़यादा समीचित लगता है।

<u>विषय वस्तु की दृष्टि से अनुवाद के प्रकार</u>

विषय वस्तू की दृष्टि से दो प्रकार से अनुवाद का विभाजन किया गया है -

1. साहित्यक अनुवाद
2. साहित्येतर अनुवाद

1. साहित्यक अनुवाद

इसके अन्तर्गत प्रमुख रूप से काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथा- साहित्य का अनुवाद, तथा गद्य रूपों – जीवनी, आत्मकथा, निबन्ध, आलोचना, रेखाचित्र – का अनुवाद आता है।

2. साहित्येतर अनुवाद

इसके अन्तर्गत वैज्ञानिक–तकनिकी अनुवाद, वाणिज्यानुवाद, समाज शास्त्रीय विषयों का अनुवाद, सचार माध्यमों के लिए अनुवाद, प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद आते हैं।

साहित्यिक अनुवाद शैली प्रधान है और साहित्येतर अनुवाद विषय प्रधान है। इन दोनों में मूल भूत अन्तर यह है कि साहित्यिक अनुवाद में प्रमुखतः उसकी शैली अभिव्यंजना और भाव भंगिमा के लिए है। लेकिन साहित्येतर अनुवाद में अभिव्यक्त विचार ही प्रमुख है। साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व आता है, जबकि साहित्येतर अनुवाद निर्वैयक्तिक है। साहित्यिक अनुवाद अधिक कलापरक और आलंकारिक शैली स्वीकार करता है, लेकिन साहित्येतर अनूवाद अनालंकारिक और वस्तुनिष्ठ होता है। साहित्यक अनुवाद में अर्थ के नष्ट होने की सम्भावना अधिक है, लेकिन साहित्येतर अनुवाद में इसके गुंजाईश कम है। साहित्यक विषयों का भावानुवाद ही अच्छा है। लेकिन साहित्येतर में विषयों का शब्दानुवाद करना काफी अच्छा है। साहित्यक अनुवाद में परिभाषिक शब्द अनिवार्य नहीं है। लेकिन साहित्येतर अनुवाद में पारिभाषिक शब्द अनिवार्य है। साहित्यिक अनुवाद में पुनसृजन आवश्यक है। लेकिन साहितयेतर अनुवाद में पुनसृजन आवश्यक नहीं है। साहित्यक अनुवाद की भाषा परिनिष्ठित आंचलिक या ग्रामीण हो सकता है। लेकिन साहित्येतर विषयों के अनुवाद की भाषा परिनिष्ठित होती है। साहित्यक अनुवाद में अनुभूति और रसात्मकता आवश्यक है। जबकि दूसरे में पठनीयता, प्रामाणिकता और बोधगम्यता आवश्यक है।

<u>साहित्यिक अनुवाद</u>	**<u>साहित्येतर अनुवाद</u>**
1. शैली प्रधान है।	1. विषय प्रधान है।
2. शैली, अभिव्यजना और भाव भंगिमा प्रमुख है।	2. अभिव्यक्त विचार ही प्रमुख है।

3. अनुवादक का व्यक्तित्व आता है।	3. अनुवादक निर्वैयक्तिक है।
4. कलापरक और आलंकारिक शैली स्वीकार करता है ।	4. आलंकारिक और वस्तुनिष्ठ होता है।
5. अर्थ के नष्ट होने की सम्भावना अधिक है ।	5.इसके गुंजाईश कम है।
6. विषयों का भावानुवाद ही अच्छा है।	6. विषयों का शाब्दानुवाद करना काफी अच्छा है।
7. पारिभाषिक शब्द अनिवार्य नही है।	7. पारिभाषिक शब्द अनिवार्य है।
8. पुनसृजन आवश्यक है।	8. पुनसृजन आवश्यक नहीं है।
9. भाषा परिनिष्ठित, आंचलिक या ग्रामीण हो सकती है	9. भाषा परिनिष्ठित होती है ।
10.अनुभूति और रसात्मकता आवश्यक है ।	10.पठनीयता, बोधगम्यता और प्रामाणिकता आवश्यक है ।

साहित्यिक अनुवाद के विविध रूप

१. काव्यनुवाद

यह अनुवाद पद्य में होता है । प्रायः मूल पद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है। लेकिन मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है। काव्यानुवाद पूर्णतः कलात्मक एवं पुनसुजन की प्रक्रिया है। वह मूल कविता से उसी के समानान्तर एक दूसरी कविता गढ लेता है। यह उस कविता का दूसरा सृजन होता है। इसलिए काव्यानुवाद को पुनः सृजन कहा जाता है। इसी कारण ही अनुवादक को मूल कविता की आत्मा में प्रवेश करना पडता है। उसे मूल कवि की भावना को पकडकर नवीन सृजन करना पडता है। काव्यानुवाद की सबसे बडी समस्या मूल की शैली है, जिसमें काव्य परम्परा, मिथक, आलंकारिक प्रयोग, मुहावरे, आदि आते है। इसलिए काव्यानुवाद केलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं पर समान अधिकार होना चाहिए, उसी प्रकार दोनों भाषाओं की काव्य परमपराओं का अच्छा परिचय होना चाहिए।

2. नाटकानुवाद

किसी नाटक का नाटक रूप में अनुवाद ही नाटकानुवाद है । लेकिन अन्य साहित्यिक विधाओं के भी नाटक रूप में अनुवाद या अन्तरण हो सकता है। वैसे ही नाटक को भी काव्य या कहानी के रूप में अनुवाद हो सकता है। नाटक का नाटक रूप में अनुवाद काफी कठिन है। क्योंकि उसे पठनीय होने के साथ ही रंग मंच पर खेला जाना भी है। इस प्राकर के अनुवाद में अनुवादक को नाट्य लेखन की क्षमता अनिवार्य है। सबसे बडी समस्या सांस्कृतिक परिवेश के अन्तरण की होती है।

2. कथा साहित्य का अनुवाद

यहाँ कथा साहित्य का लक्ष्य भाषा में कथा साहित्य के रूप में अनुवाद किया जाता है। उपन्यास और कहानी के अनुवाद में शैली एवं शिल्प की सूक्षमताओं पर ध्यान देना आवश्यक है। इसमें देश काल, और संस्कृति का विशेष महत्व है। इस अनुवाद में भाषाई प्रयोग पर भी विशेष ध्यान देना होता है।

इसी आधार पर रेखाचित्र, निबन्ध, सस्मरण, जीवनी, आलोचना, जैसे अन्य साहित्यिक विधाओं का भी अनुवाद किया जाता है। ये भी शैली प्रधान अनुवाद होते हैं।

साहित्येतर अनुवाद के विविध रूप

1. वैज्ञानिक – तकनीकी - अनुवाद

इसमें स्रोत भाषा में व्यक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी सूचनाओं का लक्ष्य भाषा में अन्तरण किया जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में विषय ही मुख्य है। इस में अनुवादक को विषय का सम्यक जानकार होना आवश्यक है। इस प्रकार का अनुवाद की भाषा वस्तुनिष्ठ और तथ्यपरक है। इसमें स्पष्टता और बोधगम्यता अनिवार्य है।

2. वाणिज्यानुवाद

वाणिज्यानुवाद व्यापार उद्योग-धन्धे, विज्ञापन, बैंक, पर्यटन आदि क्षेत्रों से संबंधित अनुवाद है । हमारे राष्ट्र के अंदर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वाणिज्यानुवाद आवश्यक है । विज्ञापन के अनुवाद लक्ष्य भाषा-भाषियों के परिवेश, सौदर्यबोध, मनोविज्ञान, आदि का विचार रहना आवश्यक है। पर्यटन के क्षेत्र में द्विभाषियों की विशेष आवश्यकता है । व्यावसायिक-पत्र, सूचना-सामग्री आदि का भी अनुवाद करना होता है। बैंकों में मातृभाषा का प्रयोग हो रहा है, इसलिए वहाँ भी हर प्रदेश के लोगों की भाषा में वाणिज्यानुवाद करना पडता है।

3. समाज शास्त्रीय विषयों का अनुवाद

शैक्षणिक आवश्यकताओं केलिए इस प्रकार का अनुवाद करना पडता है । इसमें अनुवादक को विषय का ज्ञान आवश्यक है । यहाँ पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ आती है । पाठकों के स्तर को दृष्टि में रखकर ऐसा अनुवाद करना पडता है । इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और सीधी होती है ।

4. सूचना एवं दूर संचार में अनुवाद

रेडियो, दुरदर्शन, समाचार पत्र आदि से संबंधित अनुवाद यांत्रिक वेग की अपेक्षा रहता है । कम समय में सारी बतों का अनुवाद करना पडता है । समाचार देश, विदेश की अनेक भषाओं से अनूदित होकर संपादकों के पास पहुँचते हैं। विषयों का व्यापक ज्ञान समकालीन घटनाओं के प्रति सजकता, व्यापक अद्ययन शब्दों का अजस भण्डार, शीघ्र अनुवाद करने की क्षमता आदि इस प्रकार के अनुवादकों केलिए अपेक्षित गुण हैं। समाचारों का भाव लेकर उसे सरल एवं स्पष्ट भाषा में अनुवाद करना आवश्यक है ।

5. प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद

भारत में राजभाषा के रूप में अंग्रेज़ी के साथ हिंदी का भी प्रयोग करता है । इसलिए संसद में और सरकारी कार्यालयों में हिंदी से अंग्रेज़ी में और अंग्रेज़ी से हिंदी में प्रशासनिक और कानूनी अनुवाद करना पडता है । इसके अंतर्गत सरकारी पत्र टिप्पण, आलेखन, विज्ञापन, तार, प्रेस विज्ञाप्तियाँ आदि का अनुवाद आता है । संसद तथा केन्द्रीय शासन में प्रमुख रूप से अंग्रेज़ी, हिंदी अनुवाद की आवश्यकता पडती है लेकिन अन्य प्रदेशों में अंग्रेज़ी एवं प्रांतीय भाषा तथा हिंदी एवं प्रांतीय भाषाओं के बीच अनुवाद की आवश्यकता पडेगी। प्रशासनिक अनुवाद केलिए इस्तेमाल की जानेवाली भाषा ऐसी हो जो बिलकुल सही अभिप्राय को व्यक्त करें, बात को सीधे ढंग से अभिव्यक्त किया जाय और सर्वसाधारण सुग्राह्य है । उसमें जहाँ तक हो सके, लम्बे वाक्य, अनावश्यक घुमाव पिराव, अनावश्यक मुहावरों का प्रयोग आदि से बचा जाय।

प्रकृति की दृष्टि से अनुवाद के प्रकार

प्रकृति के आधार पर अनुवाद के कई भेद है । शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, रूपांतरण, वार्तानुवाद या आशू अनुवाद इस प्रकार के कुछ भेद हैं।

1. शब्दानुवाद

वाक्य स्तर पर अनुवाद किया जाता है । शब्दानुवाद में मूल के हर शब्द पर अनुवादक का ध्यान जाता है । इसने किसी शब्द या वाक्य की अपेक्षा नहीं की जा सकती । यह अनुवाद वस्तुत तथ्यात्मक और तकनीकी साहित्य में प्रयुक्त होता है । इसमें कभी मूल सामग्री के शब्दों का उसी क्रम में अनुवाद किया जाता

है, कभी क्रम लक्ष्य भाषा का होता है । लेकिन मूल की शैली को अपनाते हैं और मूल के प्रत्येक शब्द का अनुवाद करते हुए मूल का भाव को लक्ष्य भाषा में संप्रेक्षित करते हैं।

2. **भावानुवाद**

इस अनुवाद में मूल के शब्द, वाक्य आदि पर ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है । कभी मूल के पदबंध का भावानुवाद किया जाता है । और कभी वाक्य का भावानुवाद कभी एकधिक वाक्यों को एक में मिलकर उनका भावानुवाद और कभी एकधिक खण्डों को एक में मिलाकर उनका अनुवाद भी किया जाता है । यदि मूल सामग्री सूक्ष्म भाववाली है तो उनका भावानुवाद करना अच्छा है । इस प्रकार का अनुवाद मूल रचना के समाज बन जाता है ।

3. **छायानुवाद**

संस्कृत नाटकों में स्त्री पात्र, सेवक आदि प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं। लेकिन पुस्तकों में इसके साथ संस्कृत छाया भी रहती है, इसे छायानुवाद कहते हैं। लेकिन मूल की छाया लेकर चलनेवाले अनुवाद को भी छायानुवाद कहते हैं।

4. **सारानुवाद**

इसमें मूल के मुख्य बातों का अनुवाद होता है । बडी एवं अच्छी रचनाओं का जो सार गद्य या पद्य में प्रस्तुत किया जाता है, उसे सारानुवाद कहते है । यह संक्षिप्त, अधिसंक्षिप्त, अत्यंत संक्षिप्त आदि कई प्रकार के हो सकते है । संक्षिप्तता, सरलता और स्पष्टता के कारण इस प्रकार का अनुवाद अधिक उपयोगी है । भारतीय लोकसभा के वाद-विवाद का अनुवाद इस केलिए उदाहरण हैं।

5. व्याख्यानुवाद

इसमें मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है । व्याख्या वास्तव में व्याख्याता के व्यक्तित्व, ज्ञान तथा दृष्टिकोण पर आधृत होती है । तथा उसमें कथ्य के स्पष्टीकरण केलिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण, उद्धरण, प्रमाण इत्यादि जोडे जा सकते हैं। इसी कारण व्याक्यानुवाद में अनुवाद केवल अनुवाद न रहकर काफी महत्वपूर्ण हो जाता है । लोकमान्य तिलक का गीतानुवाद इसी प्रकार का है । व्याख्यानुवाद में अनुवादक अनुवाद से अधिक बल, मूल की वातों को विस्तार के साथ अपने रंग से समझाने पर देता है । इसमें व्याख्यानुवाद से अधिक व्याख्या का भाष्य होता है इसलिए इसे भाष्यानुवाद भी कहते हैं।

6. रूपांतरण

इसका अर्थ है रूप को बदलना इसमें अनुवादक मूल को अपनी रूचि, सुविधा तथा आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित कर लक्ष्यभाषा में रखता है । इसमें कभी पदार्थों के नाम, देश, काल, वातावरण आदि में परिवर्तन किये भी जाता है और नहीं भी । भारतेंदु हरिश्चद्र ने शेक्सपीयर के नाटक 'मर्चेंड ऑफ वेनीस' का अनुवाद 'दुर्लभ बंध', अर्थात वंशपुर का महाजन नाम से किया था । उन्होंने ऐंटोपियों को अनंत, बेसीनिया को बसंत तथा,पोर्शिया को पुरस्त्री नाम दिये । कथा को पूर्ण रूप से भारतीय कर दिया है ।

7. वार्तानुवाद या आशु अनुवाद

दो भिन्न भाषा - भाषी आपस में बातें करते समय उनके बीच दुभाषियों की आवश्यकता है । दुभाषि द्वारा किये जानेवाले अनुवाद को "वार्तानुवाद" या आशु अनुवाद कहते है । इसमें अनुवादक के सामने इतना समय नहीं है, कि कोश आदि ग्रन्थ देख सके। ऐसे अनुवादक अत्यन्त व्यवहारिक, दोनों भाषाओं का अच्छा ज्ञानकर, सम्बन्धित समस्याओं को समझनेवाला होना चाहिए।

अनुवादक कथ्य का प्रतीकात्मक है। इस दृष्टि से अनुवाद के तीन रूप हुए।

१. अंतः भाषिक अनुवाद

२. अन्दर भाषिक अनुवाद

३. अन्दर प्रतीकात्मक अनुवाद

हमारे विचार किसी न किसी प्रकार के प्रतीक द्वारा अभिव्यक्त किये जाते हैं। भाषा में ये प्रतीक शब्द होते हैं, चित्र में रेखा होते हैं। इस ढंग से अनुवादक एक प्रतीक व्यवस्था द्वारा अभिव्यक्त अर्थ को दूसरी प्रतीक व्यवस्था के द्वारा व्यक्त करता है।

प्रत्यक्ष और परोक्ष

जो पढने में अनुवाद लगे उसे 'प्रत्यक्ष' कहते हैं। इसमें मूल सामग्री तथा उसकी भाषा अनुवाद के पीछे से झांकती है। जो पढने में अनुवाद न लगे उसे 'परोक्ष' कहते हैं। परोक्ष में लक्ष्यभाषा की प्रकृति और प्रवाह का अपेक्षित ध्यान रखने के कारण अनुवाद मूल सा लगता है ।

Q. कसाग्याँदे ने अनुवाद के कितने प्रकार माना है?

कसाग्याँदे के अनुसार अनुवाद चार प्रकार के है ।

1. **भाषापरक** - इसमें मूल सामग्री की अभिव्यक्ति तथा उसमें प्रयुक्त शब्दों अर्थात भाषा पर विशेष ध्यान रखते हुए अनुवाद पर बल होता है ।

2. **तथ्यपरक** - इसमें अभिव्यक्ति पर बल न होकर अभिव्यक्त तथ्य या सूचनाओं पर होता है । वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद तथ्यपरक होता है । इसे सूचनापरक या कथ्यपरक भी कहा जा सकता है ।

3. **संस्कृतिपरक** - इसमें मूल सामग्री में व्यक्त संस्कृति को अनुवाद में लाने का प्रयास होता है । वेद, उपनिषद, गीता आदि के अनुवाद संस्कृतिपरक ही होना चाहिए ।

4. **सौंदर्यपरक** - सर्जनात्मक साहित्य का मूल्य उसके काव्य सौंदर्य में निहित होता है, अतः उसका अनुवाद सौंदर्यपरक होता है ।

Q. जे.सी .कैटफोर्ड ने किन-किन आधारों पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख किया है?

तीन आधारों पर-

1. पाठ विस्तार के आधार पर

(क) पूर्ण- जिसमें कोई अंश छोडा न जाए । पाठ के प्रत्येक अंश केलिए अनुवाद में समानार्थी अभिव्यक्ति रखी जाए ।

ख) आंशिक - इस में अनुवाद की असंभाव्यता के कारण कुछ अंश छोड देते हैं। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को प्रायः इसी प्रकार का अनुवाद करना पडता है ।

2. **भाषा स्तर के आधार पर**

(क) समस्त - इसमें मूल सामग्री का भाषा के सभी स्तरों (व्याकरण, शब्द, ध्वनि, लिपि) पर अनुवाद करते हैं । वास्तव में इस प्रकार का सभी स्तरों पर अनुवाद प्रायः असंभव है ।

ख) ˙सीमित- इसमें सीमित स्तर का अनुवाद होता है ।

3. **श्रेणी के आधार पर**

(क) **मुक्त** : वाक्य या वाक्य से ऊँचे स्तर की सामग्री का अनुवाद मुक्तानुवाद कहलाता है । कई वाक्यों का समूह, पेरग्राफ आदि इसी के अंतर्गत आता है ।

ख) **शाब्दिक** : इस के अनुसार मूल सामग्री का प्रत्येक शब्द अनूदित होकर अनुवाद में आना है।

ग) **मध्यवर्गी** : यह मुक्त और शाब्दिक के बीच का अनुवाद है । इसमें अनुवादक अपने अनुवाद को दोनों अतियों (मुक्त और शाब्दिक) से बचाने के प्रयास में प्रायःबीच में रखता है ।

Q. जूलियाना हाउस के अनुसार अनुवाद के कितने प्रकार है ?

- जूलियाना हाउस के अनुसार अनुवाद के दो प्रकार है ।

Q. गद्य-पद्य होने के आधार पर अनुवाद के कितने प्रकार है ? कौन-कौन सा है ?

- अनुवाद के गद्य-पद्य होने के आधार पर तीन प्रकार है – गद्यानुवाद,पद्यानुवाद और मुक्त छंदानुवाद ।

गद्यानुवाद – यह अनुवाद गद्य में होता है । इसमें मूल गद्य का ही गद्य में अनुवाद किया जाता है । इस प्रकार के अनुवाद में मूल पद्य का भी गद्य में अनुवाद किया जा सकता है ।

पद्यानुवाद - यह अनुवाद पद्य में होता है । प्रायः मूल पद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है, किंतु मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है और विभिन्न भाषाओं में ऐसे अनेक अनुवाद हुए भी है । इसे छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कह सकते है ।

मुक्त छंदानुवाद - यह अनुवाद मुक्त छंद में होता है । इसमें जो छंद होता है, वह तुक-मात्रा आदि उन बंधनें से मुक्त होता है, जो पद्यानुवाद केलिए आवश्यक है। शेक्सपीयर के कई हिंदी अनुवाद इसके उदाहरण है । समान्यत मूल सामग्री मुक्त छंद में होने पर ही मुक्त छंदानुवाद किया जाता है ।

किंतु मूल गद्य या पद्य के भी अनुवाद हो सकते है और होते है ।

UNIT - 11

शब्दानुवाद

शब्दानुवाद में वाक्य स्तर पर अनुवाद किया जाता है। इसमें एक भाषा के भाव का दूसरी भाषा में रूपान्तरण करते समय मूल भाषा के प्रत्येक शब्द, वाक्य, उपवाक्य आदि के महत्व पर ध्यान दिया जाता है। इसमें किसी शब्द या वाक्य की उपेक्षा नहीं की जाती। यह अनुवाद वस्तुतः तथ्यात्मक और तकनीकी साहित्य में प्रयुक्त होता है। मूल कृति में हेर फेर या परिवर्तन न करने से अनुवाद में प्रामाणिकता आती है। साहित्यिक अनुवाद में शब्दानुवाद की शैली अपर्याप्त मानी जाती है। अंग्रेज़ी में लिट्टरल ट्रेंसलेशन (Literal Translation), वर्बल ट्रेंसलेशन (Verbal Translation), वेड फोर वेड ट्रेंसलेशन (Word for word Translation) आदि इसी को कहते हैं।

शब्दानुवाद के मुख्य तीन उपभेद हो सकते हैं।

1. कभी मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का प्रायः उसी क्रम में अनुवाद किया जाता है। जैसे - ' I am going home' का 'मैं हूँ जा रहा घर'। यह अनुवाद का निकृष्टतम रूप है। हर भाषा में शब्दक्रम एक जैसा न होने के कारण ऐसा अनुवाद अबोधगम्य हो जाता है।

2. कभी तो अनुवाद में क्रम आदि मूल का नहीं रहते। किन्तु मूल के हर शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रहते हैं। इसमें मूल की शैली आ जाती है। हिन्दी अखबारों में अंग्रेजी से किये गये अनुवादों में ऐसे उदाहरण प्रायः मिलते हैं। जैसे – ' It is an interesting point' 'यह एक रोचक बिन्दु है'। इसका अर्थ पहले प्रकार की तरह अस्पष्ट नहीं है लेकिन लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति इसमें नहीं आती। स्रोत भाषा की छाया लक्ष्य भाषा पर पूरी तरह छायी रहती है।

3. शब्दानुवाद के तीसरे रूप में मूल के प्रत्येक शब्द, वाक्य आदि के लक्ष्य भाषा में प्राप्त पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाषा को लक्ष्य भाषा में संप्रेक्षित किया जाता है। इसमें किसी भी शब्द या अभिव्यक्त इकाई की उपेक्षा नहीं की जाती। इसप्रकार के अनुवाद को उत्तम कोटी के अनुवाद कह सकते हैं। जैसे - ' The boy who fell from the tree, died in the hospital' – 'जो लड़का पेड से गिरा था, अस्पताल में मर गया'। सूक्ष्म भावों वाली सामग्री के अनुवाद के लिए शब्दानुवाद पर्याप्त नहीं है। लेकिन गणित, विज्ञान, विधि जैसे तथ्यात्मक विषयों केलिए शब्दानुवाद ही अपेक्षित है।

शब्दानुवाद की कमियाँ

शब्दानुवाद की कुछ कमियाँ भी होती है। यदि स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा शब्द, अर्थ, वाक्य रचना, मुहावरे आदि की दृष्टि से समान हो तो शब्दानुवाद आसान है। लेकिन यदि दोनों में इन दृष्टियों से असमानता हो तो शब्दानुवाद आसान नहीं हो जायेगा। शब्दानुवाद में स्रोत भाषा का स्पष्ट प्रभाव रहता है। इसप्रकार का अनुवाद कभी हास्यास्पद भी हो जाता है। इसमें अर्थ के अनर्थ होने की सम्भावना है।

UNIT - 12

अनुवाद के क्षेत्र

अनुवाद के अनगिनत क्षेत्र है । इनमें मुख्य नीचे दिये गये है –

1. **अनुवाद बातचीत के क्षेत्र में**

बातचीत के प्रसंग अनेक हो सकते हैं । जब आंध्रप्रदेश का एक डाक्टर केरल के अस्पताल में काम करता है तब उसे केरल के मरीज़ों की भाषा समझनी पडती है । उसे उनकी भाषा मलयालम का अर्थ समझना पडता है । इसी प्रकार जब केरल का व्यापारी कुछ चीज़ें खरीदने या बेचने केलिए दिल्ली के बाज़ार में पहुँचता है तब उसे हिंदी के अनुवाद के माध्यम से ही अपना काम करना पडता है । बात-चीत में जब हम अपनी मातृभाषा से भिन्न भाषा में बोलता है, तब हम खुद अनजाने अनुवाद करते रहते है, हम पहले मातृभाषा में सोचते हैं, फिर उसे मन में ही अन्य भाषा में अनूदित करते है । यही अनूदित रूप हमारे मुँह से निकलता है । यही कारण है कि हम कभी अन्य भाषा बोलें, उसपर हमारी मातृभाषा का कुछ-न-कुछ प्रभाव नज़र आता है । औसत भारतीय की अंग्रेज़ी भी इसका अपवाद नहीं है।

2. **अनुवाद पत्राचार के क्षेत्र में –** पत्राचार व्यापार में, कार्यालय में, न्यायालय में सर्वत्र होता है । जहाँ पत्राचार अपने प्रदेश की भाषा में करने से काम चलता है वहाँ अनुवाद की ज़रूरत नहीं पडती । किंतु एक ही प्रदेश में कई भाषाएँ बोलनेवाले पीढियाँ रहते हैं । उनकेलिए प्रादेशिक भाषा भी पडाई रहती है । **जैसे :–** केरल में तमिल-भाषी और कन्नड-भाषी काफी संख्या में है । उनके लिए केरल की प्रादेशिक भाषा मलयालम का पत्राचार अनुवाद को आवश्यक बना देता है । जो व्यापारी बडी कंपनियों में माल मँगा या उन्हें माल बेचते हैं, पत्राचार कंपनी की भाषा में करना पडता है । व्यापारियों को अंग्रेज़ी के अलावा भी जर्मन, जापानी आदि भाषाओं में लिखा-पढी करनी पडती है । इस केलिए अनुवाद के सिवाय कोई उपाय नहीं है ।

3. अनुवाद धर्म के क्षेत्र में – धर्म के क्षेत्र में प्रायः सभी देश किसी विशिष्ट भाषा का व्यवहार करते है । **जैसे :–** भारत में संस्कृत हिंदु धर्म की भाषा रही है । बौद्धों के धर्म ग्रंथ पालि भाषा में है । ईसाई लेटिन या सिरियक का उपयोग करते है । मुसलमान अरबी का । आम लोग इन धर्म-भाषाओं में कुशल नहीं हो सकते। अत :अनुवाद अनिवार्य हो जाता है ।

4. अनुवाद न्यायालयी के क्षेत्र में – न्यायालय में कर्मचारी वकील और प्रार्थी लोग अदालत के अंग होते हैं । अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेज़ी होती है। इनमें मुकदमों केलिए आवश्यक कागज़ात अकसर प्रादेशिक भाषा में होते है, मगर पैरवी अंग्रेज़ी में होती है । इस माहौल में अंग्रेज़ी और प्रादेशिक भाषा का बारी बारी से अनुवाद किया जाता है। जब मुकदमा उच्चतम न्यायालय में पहुँचता है तब प्रादेशिक भाषा के सारे कागज़ात का अनुवाद अंग्रेज़ी में करना पडता है । अनुवाद में कई महीने और कई लोंगों की मेहनत लगती है ।

5. अनुवाद शिक्षा के क्षेत्र में – आधुनिक युग में विज्ञान, समाज-विज्ञान,अर्थशास्त्र ,गणित आदि बीसियों विषय सीखे और सिखाये जाते है । उनके उत्तम ग्रन्थ अंग्रज़ी ही नहीं, अन्य विदेशी भाषाओं मे भी लिखे हुए है । उनके अनुवाद किये बिना ज्ञान की वृद्धि नहीं हो पाती । भारतीय भाषाओं को अध्ययन का माध्यम बनाने के बाद इसकी अनिवार्यता बढी है । यह अनुवाद भारत में ही हो, सो बात नहीं । जिन अंग्रेज़ों या रूसियों को भारतीय साहित्य का ज्ञान पाना है उन्हें भारतीय साहित्य का अनुवाद अंग्रेज़ी या रूसी में प्राप्त करना पडता है।

6. अनुवाद संस्कृति के क्षेत्र में - किसी भी देश की संस्कृति और कला का परिचय अन्य देश के निवासियों को उन्हीं की भाषा में देना पडता है । यह संभव नहीं है कि प्रत्येक देशवासी पडोसी व दूर के देशों की भाषाएँ समझें । ऐसी समस्या को सुलझाने का उपाय अनुवाद ही है।

7. अनुवाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में

इसके दो पहलू हैं। एक तो यह कि विकासशील राष्ट्रों के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक आविष्कारों तथा नई गतिविधियों की जानकारी पाने केलिए उतावले रहते है । उनका अन्य भाषा ज्ञान बहुत सीमित होता है । वे तभी उपर्युक्त जानकारी पा सकते है । जब उनकी जानी हुई भाषा में अन्य भाषाओं का एवं उनके ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त हो। वैज्ञानिक अनुसंधान में रूस के अग्रसर होने की वजह से रूसी भाषा भी केन्द्र में है । अमेरिका व इंग्लैंट में रूसी ग्रंन्थों का अनुवाद लोकप्रिय हो चला है । विज्ञान व प्रौद्योगिकी के ग्रहण अनुसंधान में तो सारा लेखन कार्य उन्हीं भाषाओं में होता है । इसलिए उनके छात्र विदेशी भाषा सीखने में मज़बूर है ।

8. अनुवाद संचार माध्यमों के क्षेत्र में

इनमें मुख्य है- समाचार पत्र, रेडियो एवं दूरदर्शन। यह अत्यंत लोकप्रिय है । प्रादेशिक भाषाओं के समाचार पत्र,समाचारों के लिए सरकारी सूचना, न्यूज़ एजेंसियों की दी हुई सामग्री, प्रादेशिक संवाद दाताओं की डाक आदि पर निर्भर करते है। इनमें प्रादेशिक भाषाओं में सीमित सामग्री ही प्राप्त होती है । शेष सामग्री अन्य भाषा में अनूदित करनी पडती है । इस क्षेत्र में अंग्रेज़ी भी एक हद के बाद अधूरी रहती है । रायटर जैसी अंतर्राष्ट्रीय न्यूज़ एजेंसियाँ अन्य देशों की भाषाओं के छपे और प्रसारित समाचार आदि अनूदित कराके अपने ग्राहकों को पहूँचा देते है । रेडियो के क्षेत्र में भारत की आकाशवाणी का ही उदाहरण दे सकते हैं । आकाशवाणी भारत में प्रचलित सारी प्रमुख भाषाओं में वार्ता प्रसारित करती है।

9. अनुवाद साहित्य के क्षेत्र में

अनुवाद का सबसे उर्वर स्थल साहित्य है । अनुवाद के ज़रिये ही हम अन्य भाषा की प्रतिभाओं को पहचान पाते है । प्राचीन भाषाओं के वाङमय को आधुनिक युग के पाठक अनुवाद के सहारे ही समझ पाते है । हमारे ही देश में कुछ शताब्दियों पहले तक संस्कृत साहित्य खूब पढा जाता था और बहुत लोग संस्कृत जानते थे । अब आधुनिक युग की भाषाओं का ज़ोर है और संस्कृत जाननेवाले कम । इसलिए अनुवाद से ही हम संस्कृत की सरसता ग्रहण करते है । एक सीमित क्षेत्र की भाषा में लिखे हुए उत्तम साहित्य-ग्रंथ संसार के व्यापक क्षेत्रों की भाषाओं में जब अनूदित होती है, तब उनका प्रचार व उनके लेखकों का सम्मान बढता है । रवीद्रनाथ टागोर के बंगला छंद अगर अंग्रेज़ी में अनूदित करके प्रकाशित न किए जाते तो उन्हें नोबेल पुरस्कार शायद ही मिलता । मलयालम के उपन्यासकार तकषि व पोट्टेकाट के उपन्यास तथा वल्लतोल व शंकर कुरूप की कविताएँ आदि देश विदेश की अनेक भाषाओं में अनूदित होने के ही कारण विश्वविख्यात हो सकी हैं । साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का कार्य साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन को सुगम बना देता है ।

10. अनुवाद अंतरराष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में

विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों का संवाद मौखिक अनुवादक की सहायता से ही होता है । सारे प्रमुख देशों में प्रमुख राष्ट्रों के राजदूत रहते है और उनके कार्यालय भी होते है । राजदूतों को कई भाषाएँ बोलने का अभ्यास कराया जाता है । फिर भी देशों के प्रमुख प्रतिनिधि अपने विचार अपनी ही भाषा में प्रस्तुत करते है । उनके अनुवाद की व्यवस्था होती है । जब कई भाषाओं के वक्ता एक सम्मेलन में अपनी-अपनी भाषा में विचार व्यक्त करते है तब उनके अनुवाद की व्यवस्था कठिन होती है । तथापि अनुवाद की व्यवस्था यथासंभव की जाती है । इसमें काफी प्रगति भी हुई है । परस्पर समझने से देशों में मित्रता बढती है । अंतरराष्ट्रीय एवं बहुभाषी क्षेत्र के अनुवाद में ज़रा भी चूट हो जाने से मित्रता शत्रुता में बदल सकती है ।

यहाँ अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों पर सिर्फ सरकारी नज़र डाली गई है । अनुवाद शिक्षा में अत्यंत उपयोगी उपाय का भी काम देता है । मातृभाषा में अनूदित बात छात्र के दिमाग में जितनी जल्दी बैठ जाती है, उतनी जल्दी विदेशी भाषा में बताई बात नहीं बैठती । अतएव अन्य भाषा-शिक्षण में अनुवाद से काम निया जा सकता है ।

संक्षेप में अनुवाद आजकल अनिवार्य प्रक्रिया सिद्ध हो चुकी है । इसका प्रयोग क्षेत्र बढता जा रहा है ।

UNIT - 13

काव्यानुवाद

कविता के अनुवाद को लेकर विद्धानों में काफी विवाद चल रहा है । कुछ लोगों की धारणा है कि काव्यानुवाद असंभव है तथा यह नहीं हो सकता । वास्तव में कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन तो है, लेकिन वह असंभव है यह नहीं कहा जा सकता । क्योंकि विश्व में अब तक कई हज़ार कविताओं में अनुवाद हुए है और इनको अनधिकृत अथवा अग्राह्य मानकर अस्वीकार नहीं कर सकते । अभी भी यह काम हो रहे है और आगे भी होते रहेंगी ।

काव्यानुवाद का मुख्य लक्ष्य है, विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक पहूँचाना। अनुवादक की दृष्टि से अगर देखें तो कहना होगा कि, ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास केलिए जितना उपयोगी है, काव्य आदि रागात्मक साहित्य का अनुवाद भी उसकी अन्तवृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार केलिए उतना ही महत्वपूर्ण है और काव्यानुवाद इसी ढंग से बहुत उपयोगी भी है। यही कारण है कि प्रत्येक युग का साहित्यकार विविध बाधाओं, कठिनाईयों से जूझता हुआ भी विभिन्न भाषाओं की अमर रचनाओं का रूपान्तर उन्हें अपनी भाषा (स्रोत भाषा) के सहृदय समाज को सौंपने का महान कार्य करता है। वास्तव में यह अनुवादक का पुण्य-कर्म ही है, जो पाठक वर्ग को उपकृत करता है।

काव्यानुवाद आज मात्र कविता के अनुवाद केलिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है। साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है काव्य और काव्य का अनुवाद रसिकों, विद्धानों तथा अनुवादकों के बीच लम्बे समय से विवाद का विषय बन रहा है। यही कारण है कि, कुछ लोग काव्य क्षेत्र में प्रविष्ट होनेवाले अनुवादक को " घुसपैठिया" या "परजीवी" जैसे शब्दों से संबोधित करते हैं। इनके अनुसार काव्य अनुवादक को मूल सृजनात्मक कृति का केवल भाषांतर करना होता है। कविता के अनुवादक को इसी तरह के कई प्रश्नों के कारण निरुत्साहित किया जाता रहा, उसे तिरस्कृत भी किया जाता रहा। किन्तु फिर भी काव्यानुवाद की यह मात्रा निरंतर गतिमान और प्रवाहमान रही।

कविता की रचना प्रक्रिया की विविध जटिलताओं को अच्छी तरह से समझने वाला सहृदय ही कविता का उत्तम अनुवाद कर सकता है। काव्य अनुवादक दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो पृष्टभूमियों के बीच पुल का निर्माण करता है। वह दो संस्कृतियों के बीच साक्षात्कार का माध्यम बनता है। उसकी इसी दूसरी भूमिका के कारण कालिदास, होमर, शेक्सपियर आदि बहुत से महान कवियों की अन्तराष्ट्रीय ख्याति संभव हो सकी है। इससे हमें यह मालूम होता है कि आज की दुनिया में काव्यानुवाद को बहुत प्राधान्य है और शायद इसी कारण से कविता के अनुवाद की बहुत सी समस्याएँ भी हैं। इन समस्याओं के कारण कविता को अनुवाद करते समय कभी कभी अपूर्णता जरूर होता है। शायद इसको मुख्य कारण (काव्यानुवाद) रखकर इस प्रकार की बातें कही गई है।

1) There is no such thing as translation - May
2) Traduttori traditori (अनुवादक वंचक होते है) –
   एक इतालवी कहावत
3) All translation seems to me simply an attempt to solve an unsolvable problem – Humboldt
4) Translation of a literary work is as taste less as a stewed strawberry. – H.De Forest Smith

एक कविता को अनुवाद करते समय मूल कवि की आत्मा में प्रवेश करना पडता है। यह काम एक अत्यंत संवेदनशील अनुवादक ही कर सकता है।

काव्यानुवाद की मुख्य समस्यायें

क) स्रोत भाषा की सभी शब्दों केलिए लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द,आंतरिक,बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि से सर्वदा समान नहीं होते।

साहित्यकार अपनी रचनाओं में शब्दों का प्रयोग चुनकर करता है । कवि कविता लिखने में और भी अधिक चयन करता है । वह जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वे शब्द प्रायः अपना कोशीय अर्थ या सामान्य अर्थ के अतिरिक्त अपनी ध्वनि से कुछ और अर्थ भी देते है । ध्वनि और अर्थ का यह संबंध उन चुने हुए शब्दों की विशेषता होती है और इनके कारण कविता में एक विशेष जीवंतता आ जाती है । अनुवाद में प्राय उस शब्द का प्रतिशब्द कोशीय अर्थ ही दे पाता है, ध्वनि या वर्ण मैत्री आदि के स्तर का अनुवाद इसलिए संभव नहीं हो पाता है । हर भाषा में इस प्रकार के शब्द होते ही नहीं जिनमें अर्थ और ध्वनि का यह संबंध हो । मान लें, किसी हिंदी कविता में 'बिजली' शब्द आया है । स्पष्ट ही बिजली में 'तेज़ी' और 'तरलता' की भी ध्वनि है । उसके स्थान पर अंग्रेज़ी में thunder या thunder bolt रखें तो इनमें 'कड़क' है और Lighnting रखें तो चकाचौध है । इस तरह काव्य भाषा में ये शब्द बिजली के पर्याप्त नही है, यद्यपि सामान्य भाषा में है । इसका आशय यह हुआ कि इन शब्दों के द्वारा अनुवाद करने की मूल की तेज़ी और तरलता चली गई और नये तत्व कड़क या चकाचौध की वृद्धि हो गई। अर्थात कुछ घट गया और कुछ बढ गया ।

हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ बिंब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंध होता है । दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिंब नहीं उभार सकता । अंग्रेज़ी कवि की कविता में प्रयुक्त 'spring' शब्द का ठीक प्रतिशब्द हिंदी में 'वसंत' इसलिए नहीं हो सकता कि अंग्रेज़ी भाषा के मन में स्प्रिंग का चित्र है , जो भारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है । रूस का 'जाड़ा' और अरब का 'जाड़ा' एक नहीं हो सकता, न भारत की गर्मी और फ्रांस की गर्मी। काव्य भाषा में प्रयुक्त ऐसे शब्दों का प्रतिनिधित्व इसीलिए किसी भी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्दों द्वारा कदापि नहीं किया जा सकता ।

ख) अलंकारों का अनुवाद काफ़ी कठिन है और कभी-कभी तो असंभव सा हो सकता है ।

काव्य की प्रायः अलंकार प्राधान होती है, किंतु एक भाषा के अलंकारों की दूसरी भाषा में ठीक-ठीक उतार पाना कठिन और कभी-कभी तो असंभव हो जाता है । यों तो अर्थालंकार भी उपमानों की असमानता के कारण कभी-कभी अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करते है । उदा – 'वह उल्लु जैसा है', में उल्लु मूर्खता का प्रतीक है, किंतु इसका अंग्रेज़ी अनुवाद करना हो और उल्लु के स्थान पर Owl रख दें तो काम नहीं चलेगा, क्योंकि अंग्रेज़ी में उल्लु 'बुद्धिमान' माना जाता है ।

किंतु अनुप्रास आदि शब्दालंकारों में तो यह कठिनाई और भी बढ जाती है। 'कनक कनक ते सौगुनी' का किसी भाषा में तब तक अनुवाद नहीं हो सकता जब तक उस भाषा में भी कोई ऐसा शब्द न हो जिसका अर्थ 'सोना' तथा 'धतूरा' दोनों हो ।

ग) काव्यानुवाद में छंदों की स्थिति भी अलंकारों से कम जटिल नहीं है ।

कविता छंदबद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति होती है, अतः उसका अपना प्रभाव भी होता है । साथ ही उसका एक सीमा तक कविता के भाव से संबंध भी होता है । भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छंद हैं, तो फारसी आदि में दूसरी तरह के है और यूरोपीय भाषाओं में तीसरी तरह के । ऐसी स्थिति में दो ही रास्ते अनुवादक के सामने है- या तो लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छंद में अनुवाद कर दे , पर ऐसा करने से मूल छंद का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा, या फिर वह स्रोत सामग्री के छंद में ही अनुवाद करें । किंतु इसमें भी बात

नहीं बनेगी । यदि ऐसे करे तो भी, लक्ष्य भाषा-भाषी पर अनभ्यस्त होने के कारण वह प्रभाव नहीं डाल जाएगा । मूल छंद का जो प्रभाव मूल भाषा-भाषियों पर पडता है, अनुवादक किसी भी तरह से लक्ष्य भाषा-भाषी पर नहीं डाल सकता ।

घ) काव्यानुवादक कवि होता है, और वह अपने व्यक्तित्व को मूल रचना और अनुवाद के बीच में लाने से अपने को रोक नहीं पाता- शायद रोक भी नहीं सकता।

कवि हृदय ही काव्यानुवाद के साथ न्याय कर सकते है, क्योंकि कविता का अनुवाद अनुवादों से भिन्न होता है कि वह एक प्रकार से पुनर्रचना होता है । इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है । हर काव्यानुवादक उस मूल का अपने अपने ढंग से संस्करण प्रस्तुत करता है। उदाहरण केलिए, उमर खैयाम की एक रूबाई अपने कुछ अनुवादों के साथ यहाँ देखी जा सकती है-

आमद सहरे निंदा जे मयखान-ए-मा ।
के रिंद खराबाती व दीवान - ए-मा ।
बरख़ेज कि पुरकुनेम पैमाना जे मय,
जाँ पेश कि पुरकुनंद पैमान- ए-मा ।

उमर खैयाम –

Dreaming when Dawn's left hand was in the sky
I heard a voice within the tavern cry
Awake, my little ones, and fill the cup
Before Life's Liquor in its cup be dry

Fitzereld (Rubaiyet of omar Khayyam-2)

वाम-कनक-कर ने उषा के
जब पहला प्रकाश डाला,
सुना स्वप्न में मैंने सहसा
गूँज उठी यों मधुशाला
उठो- उठो, ओ मेरे बच्चो
पात्र भरो , न विलंब करो
सुख न जावे जीवन - हाला
रह जावे रीता प्याला

मैथिलीशरण गुप्त (रूबाइयात उमर ख़ैयाम -२)

ड़) काव्य की अर्थ रचना और अभिव्यंजना की जटिलताऐं प्राय अनूद्य नहीं होती या बहुत कम ही होती है ।

काव्यभाषा अपनी अर्थ रचना में बहुत जटिल होती है । यह जटिलता ही काव्य के सौदर्य की जननी है, किंतु साथ ही यही जटिलता काव्यानुवाद में सबसे अधिक बाधक भी होती है । और अर्थ रचना जटिल होने से मूल से, उतना ही दूर चलनेवाले की आशंका भी बहुत अधिक है । अभिव्यंजना पक्ष में भी ऐसा ही होता है। ऐसे प्रश्नों को एक अच्छा अनुवादक ही पार कर सकता है ।

च) विशिष्ट कविता का अनुवाद विशिष्ट व्यक्तिनिष्ठ तथा विशिष्ट मनोदशानिष्ठ होता है।

किसी मौलिक रचना के लेखक की तरह ही, अनुवाद भी बहुत कुछ विशिष्ट मूड या मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है । यही नहीं समर्थ काव्यानुवादक, उपर्युक्त मूड के होने पर भी किसी की कुछ ही रचनाओं का अनुवाद सफलतापूर्वक कर सकता है,सभी का नहीं । और जब, एक कवि की भी सभी कविताओं का कोई

एक काव्यानुवादक सफल अनुवाद नहीं कर सकता, तो फिर सभी प्रकार के कवियों की सभी प्रकार की रचनाओं के एक व्यक्ति द्वारा अनुवाद किए जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता । इस रूप में विशिष्ट काव्य रचना का अनुवाद भी विशिष्ट काव्य -रचना की तरह ही विशिष्ट मूडनिष्ठ होता है।

छ) तत्वतः एक भाषा की काव्य -रचना अर्थात अभिव्यक्ति और प्रभावत केवल उसी भाषा में हो सकती है, किसी अन्य में नहीं ।

हर कवि भाषा विशेष का ही होता है, केवल उसी भाषा में कहा जा सकता है और उसी रूप और अर्थ में कहा जा सकता है । उसकी महानता मूल रचना में होती है, और मूल को पढकर ही हमें उसकी महानता के दर्शन हो सकते है । कवि जो कहता है, उसके सौंदर्य हमें उसी भाषा में अच्छे लगते है । किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करने से ये छूट जाता है । कितने अच्छे अनुवादक हो, अपूर्णता थोडा ज़रूर होता है ।

कविता की शैली नष्ट हो जाती है ।

एक भाषा की कविता को दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय उसकी काव्यशैली ज़रूर नष्ट हो जाता है । इस बात पर बहुत अधिक चर्चा होती रहती है । अनुवादक मूल कृति की शैली को यथावत् या समतुल्य बनाए रखने में पूर्णतः सफल नहीं हो पाता । यह उसकी अपनी सीमा भी है और विषय की भी सीमा हैं काव्यशैली का अनुवाद अधिक असाध्य साधना इसी कारण से होता है । किंतु यहाँ भी प्रबुद्ध अनुवादक 'अपोदृत्य विवेच्येत' अर्थात घटकों के विभाजन की पद्धति का अवलंबन कर अपने कार्य में प्रबुद्ध हो सकता है । स्पष्ट है कि कविता का अनुवाद एक प्रकार की असाध्य साधना ही है । इसके अंतर आनेवाली समस्याओं के कारण अनुवाद में कविता की अपनी देह थोडा ज़रूर बदलना पडता है । इसलिए विस्व के साहित्य में ऐसे काव्यानुवाद अत्यंत विरल है जिन्हें क्रोचे के मतानुसार दूसरी कृतिन कहा जा सके ।

UNIT - **14**

नाटकानुवाद

साहित्य की विविध विधाओं में नाटक एक अन्यतम विधा है। प्राचीन युग में कवि-कर्म की सफलता का चरम बिन्दु नाटक रचना माना जाता था। 'नाटकान्तम कवित्वम्' – नाटक का आनन्द दर्शक एवं पाठक दोनों लेते आये हैं। इसलिए इस लोकप्रिय साहित्य विधा का अनुवाद भी होता रहा। प्राचीन नाटकों का अनुवाद हमें प्रायः अंग्रेज़ी के माध्यम से मिलता आया है। संस्कृत नाटकों का अनुवाद आधुनिक भारतीय एवं विदेशी भाषाओँ में प्रचुर मात्रा में किया गया है। इसीप्रकार बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में बंगला नाटकों का भी अनुवाद होने लगा। अब भारत में अनेक देशी- विदेशी भाषाओं के नाटकों का अनुवाद एवं मंचन हो रहा है।

नाटक के अनुवाद करते समय अनुवादक को कई कठिनाईयों का सामना करना पडता है। नाटक के अनुवाद के लिए सबसे आवश्यक शर्त यह है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना। मूल नाटक की मंच परंपरा का तथा जिस काल की जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उसकी मंच परंपरा का सम्यक ज्ञान अनुवाद को होना ज़रूरी है। मूल की परंपरा को जाने बिने अनुवादक नाटक के उन प्रतीकात्मक संकेतों को नहीं पकड पायेगा तथा लक्ष्य भाषा की रंगोचित दृष्टि से नहीं उतार पायेगा। उसे मूल की मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-प्रभाव, ध्वनि संयोजन आदि के प्रति संवेदनशील होकर मूल को समझना होगा, तथा लक्ष्य भाषा की मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-प्रभाव, ध्वनि संयोजन आदि के अनुकूल नाटक को रूपायित करना होगा। हिन्दी में शेक्सपियर के कुछ नाटकों के बच्चनजी ने तथा रांगेय राघवजी ने उनुवाद किए हैं। इन अनुवादों में काव्यात्मकता तो है किन्तु इन दोनों ही अनुवादकों की रंगमंचीय क्षेत्र में गति न होने के कारण अनुवादों में नाटकोचित प्रभाव का सर्वथा अभाव है। इसलिए ये अनुवाद होकर भी सफल नाट्यानुवाद नहीं है।

नाटक के अनुवादक के सामने होनेवाली दूसरी समस्या भाषा शैली की है। केवल पठनीय साहित्य की भाषा कैसी भी हो कोई बहुत अंतर नहीं पडता। हर पाठक अपनी योग्यता या सुविधानुसार व्यक्ति, शब्दकोश या किसी ज्ञात भाषा में अनुवाद की सहायता से उसे धीरे धीरे या तेज़ी से समझ सकता है। नाटक में भाषा का तत्व बडा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जो गद्यात्मक संवाद है वहीं नाटक की जान है। प्रत्येक भाषा के गद्य की वाक्य संरचना उसमें शब्दों पर बलाघात, खास मुहावरे आदि होते हैं। अनुवाद में इत्यादि को शत प्रति शत लाना ज़रूरी नहीं है, मगर इनका निर्वाह न करने पर प्रभाव कम हो सकता है।

नाटकों का अनुवाद साधारण गद्य के अनुवाद के तरह आसान नहीं है। जिस प्रकार कविता का अनुवाद कवि ही कर सकता है, उसी प्रकार नाटक का अनुवाद वहीं सफलतापूर्वक करता है, जो स्वयं नाटक व मंच का मर्म जानता हो। अनुवाद की भाषा, चिन्तन आदि जिस नाटककार की भाषा, चिन्तन आदि से मिलता है उसी को अनुवाद का प्रयत्न करना चाहिए।

UNIT – **15**

मुहावरे - लोकोक्तियाँ

मुहावरों के अनुवाद की समस्यायें

अनुवाद में जिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से अनुवादक को जूझना पडता है उनमें एक महत्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। हर भाषा की कुछ अपनी विशेषताएँ होती है जिनमें प्रमुख है मुहावरे। कहने का खास ढ़ंग ही मुहावरा है। जब साधारण ढ़ंग से कहने पर उद्दिष्ट प्रभाव नहीं पडता तब मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक भाषा का मुहावरा दूसरी भाषा में मिलना उतना संभव नहीं है, लेकिन विश्व की अनेक भाषाओं में मिलते जुलते मुहावरे पाये जाते हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओँ के समान सांस्कृतिक स्रोत और आपसी प्रभाव के कारण अनेक समान मुहावरे मिलते हैं लेकिन जिन भाषाओं के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ अलग अलग है, उनमें विभिन्न प्रकार के मुहावरे प्रयुक्त होते हैं और उनके अनुवाद में कठिनाई का अनुभव होता है।

स्रोत भाषा में किसी मुहावरे के मिलने पर सबसे पहले अनुवादक को लक्ष्य भाषा में उसके शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से समान मुहावरे की खोज करनी चाहिए। अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण हिन्दी में कई ऐसे मुहावरे प्रयुक्त होते हैं। जो शब्द और अर्थ की दृष्टि से समान है।

जैसे – 'Ups and downs of life' – 'जीवन के उतार-चढ़ाव', 'Childs play' – 'बच्चों का खेल', 'Cold war' 'शीत युद्ध'।

इसप्रकार जहाँ लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के मुहावरों केलिए समान मुहावरा मिलते हैं तो अनुवादक उसे अपना सकता है। अनुवादक को यदि पूर्ण रूप से समान मुहावरा न मिले वहाँ पर लगभग समान मुहावरों की खोज करनी चाहिए। यहाँ अर्थ की दृष्टि से समान और शब्द की दृष्टि से लगभग समान मुहावरों को चुनना समीचीन है। उदाहरण के लिए – 'To add fuel in flame' – 'आग में घी डालना', 'Herculean effort' 'भगीरथ प्रयत्न'।

यदि इसप्रकार के शब्दिक और आर्थिक समानतावाले मुहावरे लक्ष्य भाषा में न मिले तो शाब्दिक समानता को छोडकर केवल आर्थिक समानता पर ध्यान रखना चाहिए। उदाः 'A drop in the ocean' – 'ऊँट के मूँह में जीरा'।

यदि स्रोत भाषा के मुहावरे का शब्दिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से समान मुहावरा लक्ष्य भाषा में न मिले तो उस मुहावरे का शब्दानुवाद करना होता है। इसप्रकार शब्दानुवाद करते समय मूल का मुहावरे का वहीं अर्थ लक्ष्य भाषा में होना चाहिए। 'Not to know the A,B,C,D of ----' – का 'क,ख,ग,घ न जानना'।

लेकिन जहाँ शब्दानुवाद से अर्थ संप्रेषण में कठिनाई आती है वहाँ भावानुवाद की प्रणाली अपना सकते हैं। कभी तो अनुवादक मुहावरों को न पहचानकर उनको सामान्य शब्द मानकर सीधे अनुवाद करने की गलती करते हैं। ऐसे अवसर पर अनुवाद अर्थ का अनर्थ हो जाता है। कभी-कभी अपेक्षित अभिव्यक्ति नहीं हो पाती।

लोकोक्ति अनुवाद की समस्याएँ

लोकोक्तियाँ अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। प्रसंग विशेष में लोकोक्तियों की अर्थवता सामान्य श्ब्दों द्वारा व्यक्त भाव या विचार से अधिक गहरी होती है। इसी कारण से उनके अनुवाद भी एक कठिन कार्य है । एक से अधिक भाषाओं की लोकोक्ति पर आधारित अभिव्यक्ति पर अधिकार पाना काफी कठिन है। वस्तुतः इन लोकोक्तियों की जडें भाषा विशेष के जीवन और संस्कृति में बहुत गहरी होती है । अपनी मातृभाषा को छोडकर अन्य भाषाओं की परंपराओं से परिचित हुए बिना उनकी संस्कृति को समझे बिना लोकोक्तियों को ठीक से समझना काफी कठिन है । इस क्षेत्र की कठिनाई का एक कारण लोकोक्ति कोश का अभाव है । द्वैभाषिक लोकोक्ति कोश बनाना भी कोई सरल काम नहीं है । इसका कारण यह है कि दो भाषाओं की लोकोक्तियों में समानार्थी लोकोक्तियाँ केवल कम ही मिल जाएगी । समानार्थी लोकोक्ति के न मिलने पर शब्दों के माध्यम से मूल भाषा की लोकोक्ति को समझ पाना आसान नहीं है। कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ भी है, जिनका अपनी पूरी अर्थवता के साथ बहुत मुश्किल से समझाई जा सकती है । अन्य शब्दों के द्वारा उनका पूरा व्यंग्य समझ पाना भी कठिन है ।

यदि अनुवादक के सामने लोकोक्ति के अनुवाद की समस्या आये तो सबसे पहले अनुवादक को स्त्रोत भाषा की लोकोक्ति के समान लोकोक्ति लक्ष्यभाषा में खोजनी चाहिए। यदि लक्ष्य भाषा में समान लोकोक्ति मिले, उसे अनुवादक अपना सकता है ।

उदा :- An empty mind is devils workshop- खाली दिमाग शैतान का घर।

२. Necessity is the mother of invention- आवश्यकता आविष्कार की जननी है ।

3. Empty vessal makes much noise – अधजल गहरी छलकत जाई।

4. As you show so shall you reep - जैसा बोयेंगा वैसा काटेगा।

शब्द और भाव दोनों की समानता वाली लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक को अपना ध्यान समान भाववाली, लेकिन शब्द स्तर पर भिन्नता रखनेवाली लोकोक्ति पर केन्द्रित रहना पडेगा ।

1. A bad carpenter quarrels with his tools - नाच न जाने आँगन टेढा।

2. Killing two birds with one stone – एक पंथ दो काज ।

3. It is no use crying over spilt milk - अब पछतावे होत है चिडिया चुग गयी खेत ।

अनुवादक के सामने सबसे बडी समस्या तब आती है, जब उसे स्त्रोत भाषा की किसी लोकोक्ति केलिए लक्ष्यभाषा में समान लोकोक्ति नहीं मिलती । ऐसे अवसर पर अनुवादक उसका शब्दानुवाद कर सकता है । लेकिन शब्दानुवाद वहीं किया जा सकता है, जहाँ उस अनुवाद से मूल का वही अर्थ लक्ष्य भाषा में भी आ जाता है ।

उदा – All that glitters is not Gold - हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती ।

2. A man is known by the company keep - मनुष्य अपनी सगत से पहचान जाता है ।

शब्दानुवाद करते समय कई प्रकार की कठिनाइयाँ आती है । स्त्रोत भाषा की सांस्कृतिक विशेषताओं की जानकारी अत्यंत आवश्यक है । ऐसी लोकोक्तियाँ भी है, जिनका शब्दानुवाद करने पर ठीक अर्थ प्राप्त नहीं होता। ऐसी लोकोक्ति का भावानुवाद करना ही उचित है । यदि भाव को गद्यात्मक शैली में न रखकर लोकोक्ति रूप में रख सके तो अधिक उपयुक्त होता है ।

उदा – Business is the salt of man - काम जीवन की जान ।

स्त्रोतभाषा में यदि कोई अनूदित लोकोक्ति हो तो उनका लक्ष्यभाषा में प्रचलित या नये आगत लोकोक्ति से प्रतिस्थापन हो सकता है ।

उदा – कौआ धोने से बगुला हो जाना - കാക്ക കുളിച്ചാൽ കൊക്കാകുമോ.

भैंस के आगे बीन बजाना - പോത്തിന്റെ മുന്നിൽ കിന്നരി വായ്ക്കുക

अर्थ की दृष्टि से पूर्णत समान

1. बंदर के हाथ में नारियल - കുരങ്ങന്റെ കൈയ്യിൽ പൂമാല
2. न उगलते बनता है, न निकलते- കയ്ച്ചിട്ട് ഇറക്കാനും വയ്യ മധുരിച്ചിട്ട് തുപ്പാനും വയ്യ
3. दूर के ढोल सुहावने - അക്കരെ നിൽക്കുമ്പോൾ ഇക്കരെ പച്ച
4. मुल्ला की दौड मस्जिद तक - ഇട്ടിയമ്മ ചാടിയാൽ കൊട്ടിലമ്പലം
5. अपना पोत्त सबको प्यारा - കാക്കയ്ക്കും തൻ കുഞ്ഞ് പൊൻകുഞ്ഞ്

शब्दानुवाद

1. पाव गलत पडने पर भी हाथी भी गिरेगा - അടിതെറ്റിയാൽ ആനയും വീഴും
2. क्या मंदिर की बिल्ली देव से डरेगी - അമ്പലത്തിലെ പൂച്ച ദേവനെ പേടിക്കുമോ
3. धोबी का कुत्ता न घर का, न घाट का - അലക്കുകാരന്റെ പട്ടി കടവിലുമില്ല,കുടിലിലുമില്ല.
4. आँखों का तारा - കണ്ണിലുണ്ണി.

हिन्दी मुहावरों और लोकोक्तियों के अंग्रेज़ी रूपान्तर

1. चार दिन की चाँदनी और अँधेरी रात – A mine days' wonder
2. आकाश से गिरा खजूर पर अटका – Out of the frying pan into the fire
3. इधर का उधर होना – To turn topsy-turvy
4. ईद का चाँद होना – To be seen once in a blue moon
5. उँगली पकड़कर पहूँचा पकड़ना – Give him an inch and he would take an ell
6. ऊँचे बोल का मूँह नीचा – Pride hath a fall
7. एक ही थैली के चट्टे बट्टे – Chips of the same block
8. ओस चाटे प्यास नहीं बुझती – Dewdrops cannot quench one's thirst
9. करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान – Practice makes a man perfect
10. जान की बाज़ी लगाना – To risk one's life

UNIT - 16

अनुवाद और भाषाविज्ञान

एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। दूसरे शब्दों में कहे तो अनुवाद में भाषा का रूपान्तर होता है। इसी कारण उसका सीधा सम्बन्ध भाषा विज्ञान से है। भाषा ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसकी सहायता से मानव अपने विचार दूसरों पर व्यक्त करता है। तात्पर्य यह है कि भाषा में प्रयुक्त शब्द, वस्तुओं, भावों, विचारों आदि के प्रतीक होते हैं। उदाहरण केलिए पुस्तक, मेज़, घोडा, अच्छाई, बुराई, भागना, लिखना आदि शब्दों को लें। ये शब्द विभिन्न चीज़ों, भावों या क्रियाओं आदि के ध्वनि-प्रतीक हैं। भाषा इन्हीं ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था है। व्यवस्था के कारण ही वक्ता जो कुछ कहता है श्रोता ठीक-ठीक वहीं समझता है। उदाहरण केलिए 'पुस्तक' कहने से श्रोता के मन में 'पुस्तक' का ही रूप आता है न 'मेज़' का। भाषा की यह व्यवस्था कारक, लिंग, वचन, पुरुष, काल, अन्वय आदि विषयक अनेकानेक नियमों के रूप में दिखाई पड़ती है। प्रत्येक भाषा केलिए अपने-अपने ध्वनि प्रतीक होते हैं। जैसे हिन्दी में 'जल' है तो इसके लिए अंग्रेज़ी में 'वाटर' है तो मलयालम में 'वेल्लम' आदि।

1) भाषाविज्ञान के कितने प्रकार हैं? स्पष्ट कीजिए?

- भाषाविज्ञान के पाँच रूप या प्रकार होते हैं – एककालिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, व्यतिरेकी तथा अनुप्रयुक्त।
- एककालिक में किसी भाषा के किसी एक काल के रूप का विश्लेषण करते हैं।
- ऐतिहासिक में कई एककालिक विश्लेषणों को श्रृंखलित करके उसका इतिहास देखते हैं।
- तुलनात्मक में दो या अधिक भाषाओं की तुलना करते हैं तथा मुख्यतः समानताओं का पता लगाते हैं।
- व्यतिरेकी में दोनों भाषाओं की तुलना करके उनके व्यतिरेकों (विरोधों) का पता लगाते हैं।
- अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान में भाषाविज्ञान से प्राप्त सैद्धान्तिक जानकारी का विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग (Applied) करते हैं।

2) भाषाविज्ञान के प्रकार और अनुवाद के संबन्ध को स्पष्ट कीजिए?

- भाषाविज्ञान के पाँचों प्रकारों से अनुवाद का सीधा सम्बन्ध है। एककालिक भाषाविज्ञान ही इसका मूल है। किसी एक या कई भाषाओं के एककालिक अध्ययन पर ही शेष सब आधारित होते हैं। उदाहरण केलिए, तुलनात्मक और व्यतिरेकी भाषाविज्ञान को लें, इनमें दो भाषाओं की तुलना की जाती है, किन्तु तुलना तब तक संभव नहीं जब तक दोनों भाषाओं का एक काल का विश्लेषण हमारे पास न हो। वहाँ अनुवाद का काम आता है।

3) अनुवाद और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के संबन्ध को स्पष्ट कीजिए?

- अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (Applied Linguistics) भाषाविज्ञान का वह रूप है, जिसमें भाषा के अध्ययन- विश्लेषण या उसके निष्कर्षों का अन्य कामों के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण केलिए, उच्चारण संबन्धी दोषों को दूर करना, टाइपराइटर के की-बोर्ड का विशेष भाषा के लिए विशेष काल में निर्धारित करना, या मातृभाषा या अन्य भाषा की शिक्षा देना आदि। कोश निर्माण तथा भाषा की पाठ्य-पुस्तकें या व्याकरण तैयार करना आदि भी अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अन्तर्गत ही आता है।

4) अनुवाद और व्यतिरेकी भाषाविज्ञान के संबन्ध को स्पष्ट कीजिए?

- व्यतिरेक का अर्थ है असमानता या विरोध। व्यतिरेकी भाषाविज्ञान में दो भाषाओं की तुलना करके दोनों की असमानताओं का पता लगाते हैं। दो भाषाओं में एक से दूसरी में अनुवाद करने में ये व्यतिरेक ही अनुवादक के सामने समस्या खड़ी करते हैं। व्यतिरेकी भाषाविज्ञान में किया जानेवाला दो भाषाओं का व्यतिरेकी विश्लेषण अनुवाद केलिए बहुत उपयोगी साबित होता है।

5) अनुवाद और अनुलेखन?

- अनूद्य सामग्री में दो प्रकार के शब्द मिलते हैं, एक तो वे जिनका अनुवाद किया जाता है और दूसरे वे जिनका अनुवाद नहीं किया जाता और थोड़े-बहुत रूपान्तर के साथ प्रायः मूल रूप ही लक्ष्य भाषा में लिख दिया जाता है। व्यक्तिवाचक संज्ञा या पारिभाषिक शब्दों के सम्बन्ध में यह समस्या प्रमुख रूप से आती है। स्रोत भाषा की ध्वनि को पहले लक्ष्य भाषा की ध्वनि में परिवर्तित करता है और फिर लक्ष्य भाषा की उन ध्वनियों के प्रतिनिधि लिपि-चिह्नों में लिखता है। जैसे – अंग्रेजी में 'Ram' के लिए हिन्दी में 'राम' शब्द को लेते हैं। यही अनुलेखन है। अनुवाद में इसका काम ज्यादा आता है।

6) लिप्यंतरण से क्या तात्पर्य है?

- लिप्यंतरण को अंग्रेज़ी में 'Transliteration' कहते हैं। अनुवादक जिस सामग्री का अनुवाद करता है, उसमें दो प्रकार के शब्द आते हैं –एक वे, जिनका अनुवाद हो सकता है और दूसरे वे, जिनका अनुवाद न हो सकता। जिन शब्दों का अनुवाद नहीं हो सकता है, उन्हें थोडा बहुत परिवर्तन के साथ प्रायः मूल रूप में ही लक्ष्य भाषा में रह देते हैं। ऐसे शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक या पारिभाषिक शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए - Doctor - डॉक्टर, Hindi - हिन्दी, Clerk - क्लर्क, College - कालिज, Radar - रडार, Radio – रेडियो आदि।

लिप्यंतरण में स्रोत भाषा की वर्तनी में प्रयुक्त अक्षरों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में प्राप्त अक्षरों को प्रतिस्थापित किया जाता है। जैसे – Zamindar – ज़मीनदार , Tamil – तमिल।

यदि स्रोत भाषा में शब्द की वर्तनी उसके उच्चारण के ठीक अनुरूप हो तथा लक्ष्य भाषा में भी वर्तनी उस शब्द के उच्चारण के अनुरूप हो तो लिप्यंतरण आसानी है। जैसे – Malayalam - मलयालम

स्रोत भाषा की वर्तनी में प्रयुक्त अक्षरों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में प्राप्त समध्वनीय अक्षरों के न होने पर लगभग समध्वनीय अक्षरों में लिप्यंतरण करना पडता है। लेकिन उसके भी न होने पर निकट ध्वनीय अक्षरों में लिप्यंतरण करना पडता है। जैसे- अंग्रेज़ी 'Film' केलिए हिन्दी में 'फ़िल्म' का प्रयोग करते हैं।

लेकिन कभी कभी लिप्यंतरण में ऐसी समस्या भी आ जाती है कि सभी शब्दों का लिप्यंतरण नहीं कर सकता। स्रोत भाषा की वर्तनी और उच्चारण में अन्तर है तो यह समस्या उत्पन्न हो जाती है। जैसे- 'Rousseau' शब्द का लिप्यंतरण करता है तो मिलते हैं 'राउस्सेअउ' जबकि इसे हिन्दी में होना चाहिए 'रूसो'। यह समस्या स्रोत भाषा में वर्तनी तथा उच्चारण में अन्तर के कारण है। इस प्रकार लिप्यंतरण के निर्णय का आधार भी स्रोत भाषा के शब्द का उच्चारण अर्थात् ध्वनि ही है।

7) प्रतिलेखन से क्या तात्पर्य है?

- प्रतिलेखन को अंग्रेज़ी में 'Transcription' कहते हैं। स्रोत भाषा के वर्तनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को आधार मान कर लक्ष्य भाषा में उस उच्चारण के अनुरूप लिखना ही प्रतिलेखन है। उदाहरण केलिए 'Rousseau' का स्रोत भाषा में उच्चारण 'रूसो' जैसा है, अतः हिन्दी में उसे 'रूसो' लिखना है, यही प्रतिलेखन है। इस प्रकार प्रतिलेखन के निर्णय का आधार भी स्रोत भाषा के शब्द का उच्चारण अर्थात् ध्वनि ही है।

8) अनुवाद और ध्वनिविज्ञान के संबन्ध को स्पष्ट कीजिए?

- अनुवादक जिस सामग्री का अनुवाद करता है उसमें दो प्रकार के शब्द हो सकते हैं- एक तो वे जिनका अनुवाद किया जाता है और दूसरे वे जिनका अनुवाद नहीं किया जाता और थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ प्रायः मूल रूप में ही लक्ष्य भाषा में लिख दिया जाता है। इस दूसरे प्रकार के शब्दों को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में लाने में अनुवादक को ध्वनिविज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा या पारिभाषिक शब्द आदि होते हैं।

9) अनुवाद और अर्थविज्ञान के संबन्ध को स्पष्ट कीजिए?

- अनुवाद का एकमात्र दायित्व स्रोत भाषा में व्यक्त किए गये अर्थ को लक्ष्य भाषा में यथावत् उतार देना है। इसी प्रकार अर्थविज्ञान का एकमात्र कार्य भाषा के अर्थ पक्ष का अध्ययन है। इस तरह अनुवाद और अर्थविज्ञान दोनों ही भाषा के अर्थ पक्ष से संबन्धित है।

10) अनुवाद और वाक्यविज्ञान के संबन्ध को स्पष्ट कीजिए?

- वाक्यविज्ञान भाषाविज्ञान की एक शाखा है, जिसमें भाषा के वाक्यों की रचना का अध्ययन होता है। अनुवाद में एक भाषा के वाक्यों का दूसरी भाषा में रूपान्तर करते हैं, दूसरे शब्दों में, एक भाषा की वाक्य रचना को दूसरी भाषा की प्रकृति के अनुकूल वाक्य रचना में परिवर्तित करते हैं। इस तरह विभिन्न भाषाओं के वाक्यों के विश्लेषण का विज्ञान, वाक्यविज्ञान का अनुवाद में निश्चय ही बहुत सहायक हो सकता है।

UNIT - 17

पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद

समाचार पत्र का काम अधिक अधिक समाचार इकट्ठा करके पाठकों को देना है। लोग इसी समाचार पत्र को अधिक महत्व देते हैं जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के और ताज़ा समाचार हो। समाचार का संग्रह करने वाली समाचार एजेंसियाँ अब अधिकांश देशों में हैं। समाचार प्रमुख रूप से इन समाचार एजेंसियों एवं संवाददाताओं से प्राप्त होते हैं। ऐसी एजेंसियाँ अपने संवाददाताओं के ज़रिए समाचार एकत्रित करके समाचार पत्रों को बेज देती है। समाचार देश विदेश की अनेक भाषाओं से अनूदित होकर संपादकों के पास पहूँचते हैं। संपादकों को इन समाचारों का न केवल अपनी अपनी भाषाओं में अनुवाद करना पडता है, बल्कि उसका संपादन भी करना पडता है। भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र अपने देश के प्रमुख नगरों में संवाददाता नियुक्त करके उनसे खबरें एकत्रित करते हैं। वे दूसरे देशों और राज्यों के समाचार अंग्रेजी समाचार एजेंसियों से प्राप्त करते हैं। यहाँ के समाचार पत्र उनका अनुवाद छपते हैं।

समाचार के अनुवाद की सबसे बडी विशेषता यह है कि उसमें राजनीति अर्थ शास्त्र, वाणिज्य, ज्ञान-विज्ञान, खेल-कूद, मनोरंजन आदि विभिन्न विषयों से संबन्धित समाचारों का अनुवाद करना होता है। उसमें प्रत्येक की भाषा का अपना स्वरूप होता है। यदि समाचार पत्र के कार्यालयों में विभिन्न भाषाओं और विषयों के अनुवादक प्राप्त हो तो अनुवाद सफलतापूर्वक हो सकता है। इस प्रकार के अनुवादकों के लिए विषयों का व्यापक ज्ञान, समकालीन घटनाओं के प्रति सजकता, व्यापक अध्ययन, शब्दों का अजस्र भंडार, शीघ्र अनुवाद करने की क्षमता आदि अपेक्षित गुण हैं। सभी विषयों की सामान्य जानकारी भी आवश्यक है, और कुछ विशेष विषयों की जानकारी भी। उसे अपने अनुवाद में संशोधन के लिए अधिक समय नहीं मिलता इसलिए अत्यंत सतर्क रहना पडता है।

समाचार के अनुवाद में और एक बडी समस्या उसकी भाषा के संबन्ध में है। अनुवादक को समाचार का भाव लेकर उसे सरल एवं स्पष्ट भाषा में लिख देना पडता है। समाचार एजेंसियों से प्राप्त समाचारों में उलट-फेर करने का उसे अधिकार नहीं है। लेकिन कठिनाई नये नये शब्दों एवं प्रयोगों के अनुवाद के संबन्ध में आती है। कोश आदि से सहायता लेने का अनुवादक के पास समय नहीं रहता। वह भी नहीं अनेक नये नये शब्द दूर दूर की भाषाओं से आते हैं ऐसे शब्द कभी तो कोश में भी नहीं मिलते। ऐसी स्थिति में अनुवादक को प्रसंगानुसार उन शब्दों को रख देना पडेगा, लेकिन अनुवादक को क्लिष्ट शब्दानुवाद से बचना भी पडता है। वाक्य रचना में मूल के क्रम पर ध्यान न देकर लक्ष्य भाषा की स्वाभाविक वाक्य रचना को अपनाना चाहिए। जटिल वाक्य रचना की अपेक्षा सरल एवं लघु वाक्य समाचार पत्रों में आवश्यक होता है।

समाचार पत्रों की अनुवाद की एक व्यावहारिक समस्या शीघ्रता की है। शाम के वक्त या आधीरात के समय पहूँचनेवाला समाचारों का ध्यानपूर्वक शीघ्रता के साथ अनुवाद एवं चैन करना पडता है। शीघ्रता में अनुवाद करते समय प्रसंग के छूट जाने की संभावना अधिक है। अनुवादक के पास केवल कम समय रहता है, उतने ही समय में उसे सारी सामग्रियों का अनुवाद करना होता है।

समाचार पत्र के अनुवाद की क्षेत्र की एक बडी समस्या व्यक्ति- नामों, अनजान जगहों के अनुवाद में आती है। आजकल अंग्रेज़ी रूप की जगह अधिक प्रचलित भारतीय रूप को लिखने की प्रवृत्ति बड रही है। अंग्रेज़ी एजेंसियों से प्राप्त व्यक्ति नामों का अपनी भाषा में लिप्यंतरण करना पडता है। विदेशी भाषाओं की ध्वनियों को यदि उन भाषाओं से सीधे भारतीय भाषाओं में लिखा जाए तो ज्यादा सहज लग सकती। उसके बदले रोमन लिपि में बदलने पर बडी गडबडी होती है। अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त समाचारों के कारण मलयालम के 'पट्टम ताणु पिल्ला' को 'पोथम थानु पिल्लय' लिखा जाता है। विदेशी भाषाओं के शब्दों के लिप्यंतरण में भारतीय भाषाओं की सहज प्रकृति को दृष्टि में रखना चाहिए।

शीर्षकों के अनुवाद करते समय अनुवादक को बहुत सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि अनुवाद एक साथ करोडों पाठकों के पास पहूँचता है। इसलिए उसमें संप्रषणीयता, रोचकता, प्रभावोत्पादकता आदि गुण सहज रूप में ही होना चाहिए। इसमें सरलता और बोधगम्यता भी आवश्यक है। इसलिए अंग्रेज़ी से नकल करने के स्थान पर स्वतंत्र रूप से उचित, आकर्षक शीर्षक देना ही अच्छा होगा, साथ ही पाठकों को मनोविज्ञान एवं सांस्कृतिक स्तर का भी खूब ज्ञान आवश्यक है।

UNIT - 18

पारिभाषिक शब्दावली:अर्थ एवं परिभाषा

भारतीय संविधान के अंतर्गत हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा घोषित किया गया है। ज्ञान-विज्ञान की निरंतर हो रही प्रगति से हिन्दी के क्षेत्र को विस्तृत करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। अब सभी विषयों पर हिन्दी में पुस्तकें लिखी जा रही हैं तथा प्रशासनिक कार्य हिन्दी में हो रहा है। इन सब कारणों से पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता बढ़ी है।

शब्द दो प्रकार के होते हैं- सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द। सामान्य शब्द का प्रयोग समाज में सामान्य व्यवहार विषयक बातों की अभिव्यक्ति के लिए सामान्य रूप से होता है। हर भाषा के सामान्य अभिव्यक्ति के मूल आधार ये शब्द होते हैं। इन में सामान्य जीवन से संबन्ध रखनेवाले बहुत संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि आते हैं। सामान्यतः कोई व्यक्ति जब कोई भाषा सीखता है तो पहले इन्हीं शब्दों को सीखता है। सामान्य जीवन को चलाने केलिए हम ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के होते हैं तथा विशिष्ट ज्ञान, विज्ञान या शास्त्र में इसकी अर्थ सीमा परिभाषित रहती है। डॉ.भोलानाथ तिवारी ने पारिभाषिक शब्दों को इसप्रकार पारिभाषित किया है- "पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं, जो अपने अपने क्षेत्रों में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से पारिभाषित होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से पारिभाषित होने के कारण ही इन्हें पारिभाषिक शब्द कहा जाता है।" डॉ.रघुवीर ने कहा- "जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है, वे पारिभाषिक शब्द होते हैं।" डॉ.गोपाल शर्मा के अनुसार "किसी ज्ञान विशेष के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त शब्द पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। इनका अर्थ एक परिभाषा द्वारा स्थिर कर दिया जाता है।"

पारिभाषिक शब्द को तकनीकी शब्द भी कहते हैं। अंग्रेज़ी में ऐसे शब्दों को 'Technical Terms' और ऐसी शब्दावली को 'पारिभाषिक शब्दावली' या 'Technical Terminology' कहते हैं।

पारिभाषिक शब्दों में प्रमुख विचार या भाव का समावेश होता है। इसमें पूरी व्याख्या नहीं आती। इसलिए पहले-पहल किसी विषय में किसी पारिभाषिक शब्द का प्रयोग करते समय इसके अर्थ को व्याख्या द्वारा स्पष्ट कर देना आवश्यक है, ताकि उसके अर्थ में भ्रम न हो।

यह प्रवृत्ति तब तक अपनाई जाती है जब तक पारिभाषिक शब्द को पर्याप्त प्रचलन न मिल जाए। अधिकांश पारिभाषिक शब्द अर्थ संकोच से बनते हैं, मूलतः इसका विस्तृत अर्थ होता है। उनके विस्तृत अर्थ को संकुचित करके पारिभाषिक शब्द बनते हैं। किसी भाषा के पारिभाषिक शब्दों को विभिन्न आधारों पर कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. <u>इतिहास के आधर पर</u> - इतिहास के आधर पर पारिभाषिक शब्द चार प्रकार के होते हैं-

तत्सम – उदा:– अणु – Molecule

तत्भव – Acknowledgement केलिए पावती

देशज – silt केलिए भल

विदेशी – मीटर, विटामिन

2. <u>प्रयोग के आधार पर</u> - प्रयोग के आधार पर पारिभाषिक शब्द तीन प्रकार के होते हैं-

a) पूर्ण पारिभाषिक शब्द - पूर्ण पारिभाषिक शब्द वे होते हैं, जो केवल पारिभाषिक शब्द के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। उदा – भाषाविज्ञान में ध्वनिग्राम, भौतिकी में ऊर्जा, गणित में दशमलव, नाट्यशास्त्र के प्रकरी आदि।

b) अर्ध पारिभाषिक या माध्यस्थ शब्द - अर्ध पारिभाषिक शब्द वे होते हैं जो पारिभाषिक अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं तथा सामान्य अर्थ में भी। उदा:– 'अक्षर' – यह शब्द सामान्य भाषा में लिखित वर्ण या letter के लिए आता है, किन्तु भाषाविज्ञान में syllable केलिए। इसी प्रकार 'असंगति' अलंकार शास्त्र में एक अलंकार का नाम है किन्तु सामान्य भाषा में संगति न होना और 'आपत्ति' शब्द सामान्य शब्द के रूप में बातचीत में आता है और पारिभाषिक शब्द के रूप में कानून या विधि में।

c) सामान्य पारिभाषिक शब्द

इनका प्रयोग सामान्य व्यवहार में करते हैं। ये विशिष्ट वस्तु, भाव या संकल्पपना का बोध कराते हैं। जैसे:- मेज़, कुरसी, दाँत आदि।

कभी एक ही वस्तु का बोध करानेवाला शब्द सामान्य, अर्ध पारिभाषिक एवं पूर्ण पारिभाषिक के रूप में प्रयुक्त होता है। 'बिमारी' में 'शरीर की गर्मी' सामान्य शब्द है, 'बुखार' अर्ध पारिभाषिक है और 'ज्वर' पूर्ण पारिभाषिक शब्द है।

3. <u>स्थूलता या सूक्ष्मता के आधार पर</u>

स्थूलता या सूक्ष्मता के आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो भेद है-

1) संकल्पना बोधक पारिभाषिक शब्द

यह शब्द विभिन्न प्रकार की संकल्पनाओं को व्यक्त करते है।

जैसे – मनोविज्ञान में -व्यक्तित्व, हीनग्रन्थी।

भौतिकी में - ऊर्जा।

2) वस्तु बोधक पारिभाषिक शब्द

यह शब्द ठोस चीज़ों को व्यक्त करने केलिए प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- रसायन शास्त्र में - कैलशियम, सोडियम, कारबण आदि।

वनस्पति में – ज़ाइलम, फ्लोयम।

4. <u>स्रोत के आधार पर</u>

इसके आधार पर पारिभाषिक शब्द के तीन भेद हैं-

a) भाषा में पहले से प्रयुक्त शब्द

उदा – जीव, छूना, नस, बिजली

b) दूसरी भाषा से ग्रहित शब्द

रडार, मीटर, कारबण, अकादा

c) नव निर्मित शब्द

उदा – मन्त्रिमण्डल, मन्त्रालय, निदेशक, संपादकीय

5. <u>विषय के आधार पर</u>

विषय के आधार पर भी पारिभाषिक शब्द के कई भेद हो सकते हैं। जितने विशिष्ट विषय होते हैं, पारिभाषिक शब्द के उतने भेद भी हो सकते हैं।

जैसे – रसायन शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली

भाषा वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली

दर्शन शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली आदि।

पारिभाषिक शब्दावली केलिए आवश्यक गुण

1. पारिभाषिक शब्द अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट, सुबोध एवं सुनिश्चित होना चाहिए। उसमें अव्याप्ति या अतिव्याप्ति दोष न होना चाहिए।

2. उच्चारण की दृष्टि से प्रयोक्ता भाषा-भाषियों केलिए पारिभाषिक शब्दों को सरल होना चाहिए।

3. एक पारिभाषिक शब्द का एक ज्ञान या विज्ञान में एक ही अर्थ होना चाहिए। उसी प्रकार एक ज्ञान या विज्ञान में एक वस्तु या संकल्पना केलिए एक ही पारिभाषिक शब्द होना चाहिए।

4. शब्द यथासम्भव छोटा हो।

5. पारिभाषिक शब्द ऐसे हो, जिनसे आवश्यकता पडने पर उपसर्ग, प्रत्यय आदि की सहायता से अन्य शब्द बनाया जा सके।

6. ध्वन्यात्मकता तथा अर्थपरक दृष्टि से पारिभाषिक शब्द ऐसे हो जो सभी भाषाओं द्वारा स्पष्ट एवं सरलता पूर्वक प्रयुक्त हो सकें।

7. समान श्रेणी के पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता चाहिए।

उदा – भाषा विज्ञान में – ध्वनिग्राम, अर्थग्राम, रूपग्राम...।

8. असमान संकल्पनाओं या वस्तुओं केलिए मिलते जुलते शब्द कभी न होनी चाहिए।

9. सम्बन्ध संकल्पनाओं और वस्तुओं केलिए मिलते जुलते या सम्बन्ध शब्द होना चाहिए।

10. हर शब्द को दूसरे से इतना अलग होना चाहिए कि उसे सुन या पढ़कर किसी और पारिभाषिक शब्द का भ्रम न हो।

UNIT - 19

पारिभाषिक शब्द-विषयक विभिन्न संप्रदाय

जिस शब्दावली का प्रयोग भौतिकी, दर्शन, रसायन जैसे विज्ञानों या शास्त्रों में किया जाता है, जो अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप से परिभाषित होते हैं। ऐसी शब्दावली को पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। भारत में पारिभाषिक शब्दों की लम्बी परंपरा मिलती है। यहाँ बहुत प्राचीन काल में ही संस्कृत भाषा में धर्म, दर्शन, चिकित्सा, विज्ञान, ज्योतिष आदि से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है। लेकिन बाद में ज्ञान-विज्ञान की तेज़ प्रगति से भारत में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण केलिए आवश्यकता हुई। आजकल विद्यालयों में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने केलिए अपनी अपनी भाषा में पारिभाषिक शब्दावली रचने का प्रयास प्रारंभ हुआ।

मूल लेखक अपनी भाषा में पारिभाषिक शब्दावली की कमी कैसे दूर करें या अनुवादक मूल भाषा के पारिभाषिक शब्द केलिए लक्ष्य भाषा में शब्द न मिलने पर क्या करें इत्यादि विषयों पर मतभेद रहा है। हिन्ही में पारिभाषिक शब्दावली की रचना केलिए प्रमुख चार सम्प्रदाय हुई है-

1) पुनरुद्धारवादी संप्रदाय।
2) आदानवादी सम्प्रदाय।
3) प्रयोगवादी सम्प्रदाय(हिन्दुस्थानी वादी सम्प्रदाय)
4) समन्वयवादी संप्रदाय(मध्यम मार्गी सम्प्रदाय)

पुनरुद्धारवादी संप्रदाय

इसके लिए राष्ट्रीयतावादी, संस्कृतवादी, प्राचीनवादी जैसे नाम भी प्रचलित हैं। यह संप्रदाय भारतीय भाषाओं की सारी की सारी पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत से लेने के पक्ष में है। इस संप्रदाय का प्रमुख प्रवर्तक डॉ.रघुवीर के अनुसार – जब भारतीय भाषाओं के लिए सम्पन्न संस्कृत भाषा के पारिभाषिक शब्द अनेक विषयों केलिए सुलभ है तब अपने देश की गरिमा और परंपरा को छोडकर ग्रीक-लैटिन शब्दों को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है। इस संप्रदाय के अनुसार हमें प्राचीन संस्कृत से पारिभाषिक शब्द को लेना ही अच्छा है। यदि संस्कृत में आधुनिक पारिभाषिक शब्द के लिए शब्द नहीं है तो दो या अधिक संस्कृत शब्दों के मेल से या संस्कृत शब्दों में प्रत्यय- उपसर्ग जोडकर नये शब्द बनाना चाहिए। हर भाषा में उसी भाषा या उस भाषा के शब्दों से ही नये शब्द बना सकते हैं।

इस संप्रदाय की कुछ त्रृटियाँ भी होती हैं। आजकल संस्कृत जानने या सीखनेवालों की संख्या बहुत कम हैं। संस्कृत पर हिन्दुओं की भाषा होने का आरोप भी लगाया जाता है। इस प्रतिकूल परिस्थिति में संस्कृत धातुओं से नये पारिभाषिक शब्द घटना ठीक नहीं है। इसके त्रृटिपूर्ण होने का और एक कारण यह है कि प्रतिदिन के व्यवहार में आनेवाले और सुपरिचित अंग्रेज़ी, फारसी, अरबी शब्दों को निकालकर संस्कृत भाषा के आधार पर नये शब्द बनाना चाहते थे। ऐसा होने पर हिन्दी अर्थ कृत्रिम एवं कठिन बन जायेगी।

उदा – रिक्षा – नरयान

रेल – समयान

टिकट – सम्यान पत्र

इस संप्रदाय ने अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली की अवहेलना की है।

Meter – मान

Kilo Meter - सहस्र मान

Radio - नभोवाणी

इस प्रकार संस्कृत को आधार मानकर हिन्ही शब्दावली का निर्माण करना उचित नहीं है।

आदानवादी सम्प्रदाय

इस संप्रदाय को अन्तर्राष्ट्रीयतावादी, शब्दग्रहणवादी, स्वीकरणवादी आदि नामों से भी पुकारा जाता है। इसके अनुसार अंग्रेज़ी और अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों के लिए पारिभाषिक शब्द बनने या संस्कृत से लेने की आव्यकता नहीं है। इन शब्दों को ज्यों का त्यों या हिन्दी की ध्वनि व्यवत्था के अनुरूप अनुकूलित करके लेना काफी है।

उदा – Academy – अकादमी, Technic – तकनीक

इससे कई लाभ हैं। ऩये शब्द बनाने या खोजने की आवश्यकता नहीं पडती। अनुवादक के लिए शब्दावली की समस्या नहीं आती। अंग्रेज़ी और अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली से परिचित होने पर हमें विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित वैज्ञानिक साहित्य को समझने में आसानी होगी। इस संप्रदाय की कमी यह है कि कोई भी देश सारे के सारे शब्द किसी दूसरी भाषा से लेना अपने लिए गर्व की बात नहीं मान सकता। इस संप्रदाय में दो मत हैं। कुछ लोग अंग्रज़ी आदि के शब्दों का ज्यों का त्यों लेना चाहते हैं।

उदा – एकेटमी, टेकेनिक।

दूसरे मत के अनुसार इन शब्दों को हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था के अनुरूप अनुकूलित कर लेना है।

उदा – अकादमी, तकनीक।

प्रयोगवादी सम्प्रदाय

इस संप्रदाय का दूसरा नाम है हिन्दुस्थानीवादी संप्रदाय। इस संप्रदाय में हिन्दुस्थानी भाषा के समर्थक आते हैं। इस संप्रदाय ने हिन्दी- उर्दू के समन्वय पर बल दिया और संस्कृत, अरबी, फारसी के मिश्रित रूप से पारिभाषिक शब्द बनाये हैं। लेकिन इस संप्रदाय ने संस्कृत शब्दों से यथासंभव बचना चाहा और अरबी, फारसी से अधिकांश शब्द लेने की कोशिश की।

उदा – President – राजनीति

Psychology – मनविज्ञान

Emergency - अचानकी

असल में इस संप्रदाय के शब्द हास्यास्पद है। इसलिए इस संप्रदाय का बाद में मान्यता नहीं मिली।

समन्वयवादी संप्रदाय(मध्य मार्गी सम्प्रदाय)

इस संप्रदाय उपर्युक्त तीनों संप्रदायों के समन्वय के आधार पर सहज चल सकने योग्य और हमारी भाषा में खपनेवाले शब्दों को ग्रहण करने के पक्ष में है। इसके अनुसार सबसे पहले अपने वर्तमानशब्द भण्डार का पूरा उपयोग करना है। उसके बाद जो विदेश, देशी आदि अन्य शब्द हमारी भाषा में खूब चले हैं। उनको स्वीकार करना है। ऐसे शब्दों को ध्वन्यनुकूल करके लेना भी है। अनिवार्य होने पर अन्य भाषाओं से ग्रहित शब्दों के आधार पर नये शब्द बनाये जा सकते हैं। इसमें यथासंभव अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली के उपयोग में बल दिया गया है। केन्द्रसरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने इस समन्वयवादी संप्रदाय को स्वीकार किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली

आधुनिक विज्ञान का विकास यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों तथा अमरीका में हुआ है। जब किसी देश में कोई नया आविष्कार होता है तब तत्सम्बन्धी कार्य अपनी भाषा में वे लिखकर रहते हैं। एक देश में होनेवाली आविष्कार की कहानी, वैज्ञानिक लेखन आदि को दूसरा देश तुरन्त अपनी भाषा में अनूदित कर लेता है। इसप्रकार अनुवाद करते समय अधिकांश मूल शब्दों को ही स्वीकार किया जाता है। इसप्रकार अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, जापानी आदि भाषाओं में अनेक पारिभाषिक शब्द होते हैं। विद्वानों ने यह बताया है कि चालीस से साठ प्रतिशत पारिभाषिक शब्दावली तीन या उससे अधिक भाषा के समान है। कभी ऐसा भी होता है कि प्रत्येक देश की भाषा ऐसे पारिभाषिक शब्दों की वर्तनी और उच्चारण में ध्वन्यानुकूल करती है। ऐसी शब्दावली को अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली कहते हैं। ऐसे समान अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को किसी भी भाषा के अनुवाद में स्वीकार कर लेना उचित माना गया है।

भारत सरकार द्वारा स्थापित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने भी अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को स्वीकार किया है। इस सम्बन्ध में आयोग ने कुछ नीतियाँ अपनायी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय शब्द को यथासम्भव उसके अंग्रेज़ी रूप में ही अपनाना चाहिए और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार उनका लिप्यंतरण करना चाहिए।

उदा – तत्वों के नाम – Hydrogen, Carbon आदि

माप-तोल की इकाईयाँ – लिटर, मीटर, कलोरी(Calorry)

गणित विज्ञान के सूत्र चिह्न आदि

पेट्रोल, रेडियो जैसे शब्द।

UNIT - 20

पारिभाषिक श

प्रशासन

Account	लेखा, खाता
Account book	लेखा बही
Account head	लेखा शीर्ष
Account joint	संयुक्त लेखा
Accountant	लेखाकार
Account General	महालेखाकार
Account officer	लेखा अधिकारी
Acknowledgement	पावती, सूचना, अभिस्वीकृति
Act	अधिनियम, कार्य
Acting	कार्यकारी
Action	कार्यवाई
Ad hoc	तदर्थ
Adjournment	स्थगन
Administration	प्रशासन
Administrative	प्रशासनिक, प्रशासकीय
Administrator	प्रशासक
Admissibility	ग्राह्यता, स्वीकार्यता
Admonition	भर्त्सना
Advalorem	यथामूल्य
Advance	अग्रिम, पेशगी
Adviser	सलाहकार
Affidavit	शपथपत्र, हलफ़नामा
Agency	अभिकरण
Agenda	कार्यसूची, कार्यक्रम
Agreement	करार, अनुबन्ध

Allegation	आरोप, अभिकथन
Allotment	आबंटन
Allowance	भत्ता
Allowance, city compensatory	नगर प्रति-पूरक भत्ता
Allowance, dearness	महँगाई भत्ता
Allowance, overtime	समयोपरि भत्ता
Allowance, travelling	यात्रा भत्ता
Amendment	संशोधन
Annexure	अनुलग्नक
Anomaly	असंगति
Antecedents	पूर्ववृत्त
Anticipated expenditure	प्रत्याशित व्यय
Anti-corruption branch	भ्रष्टाचार- निरोध शाखा
Appendix	परिशिष्ट
Appointment	नियुक्ति
Appropriation	विनियोजन
Approval	अनुमोदन
Article	अनुच्छेद, नियम
Assessment	कर-निर्धारण
Assistant	सहायक
Assistant auditor	सहायक लेखा परीक्षक
At par	सममूल्य
Attached	संलग्न, संबद्ध
Attestation	साक्ष्यांकन, तसदीक
Audit	लेखापरीक्षा
Auditor	लेखापरीक्षक
Autonomous	स्वायत्त
Bearer	वाहक
Bibliographer	ग्रन्थ सूचीकार

Bill	विधेयक, हुंडी
officer development Block	खंड विकास अधिकारी
Board of higher secondary education	उच्चतर माध्यमिक शिक्षा विभाग
Bulletin	समाचारिका
Cabinet	मंत्रिमंडल
Candidate	अभ्यर्थी, उम्मीदवार
Caretaker	अवधायक
Cashier	रोकडिया
Caste	जाति
Cell	कक्ष, प्रकोष्ठ
Census	जनगणना
Centralization	केन्द्रीकरण
Chancellor	कुलाधिपति
Chairman	सभापति
Charge sheet	आरोप पत्र
Chief commissioner	मुख्य आयुक्त
Chief justice	मुख्य न्यायमूर्ति
Chronological summary	तारीखवार सार
Citizenship	नागरिकता
Circular	परिपत्र
Claim	दावा
Clerical error	लेखन-अशुद्धि
Clerk	लिपिक
Clerk ,lower division	अवर श्रेणी लिपिक
Clerk , upper division	प्रवर श्रेणी लिपिक
Coach	गाडी/ डिब्बा
Code	संहिता
Collector	समाहर्ता
Commission	आयोग
Commissioner	आयुक्त

Community	समुदाय
Communique	विज्ञप्ति
Competent authority	सक्षम-अधिकारी
Concurrence	सहमति
Consultant	परामर्शदाता
Contigencies	आकस्मिक व्यय
Controller	नियन्त्रक
Corrigendum	शुद्धिपत्र
Counter signature	प्रतिहस्ताक्षर
Daily wages	दैनिक मजदूरी
De facto	वस्तुतः
Demotion	पदावनति
Deputation	प्रतिनियुक्ति
Designation	पदनाम
Despatch	प्रेषण
Directive	निदेश
Director	निदेशक
Director general	महानिदेशक
Directorate	निदेशालय
Directory	निर्देशिका
Discrepancy	विसंगति
Discretionary power	विवेकाधिकार
Dissent	विसम्मति, असहमति
Division	प्रभाग, मंडल
Document	प्रलेख, दस्तावेज़
Draft	प्रारूप, मसौदा
Drafting	प्रारूपण, मसौदा लेखन
Draftsman	प्रारूपकार
Efficiency Bar	दक्षतारोध

Election commission	निर्वाचन आयोग
Emergency	आपातस्थिति
Emoluments	परिलब्धियाँ
Employer	नियोक्ता
Enclosure	संलग्नक
Endorsement	पृष्ठांकन
Enquiry	जाँच, पूछताछ
Errata	शुद्धिपत्र
Exchequer	राजकोष
Executive	कार्यपालिका, कार्यपालक
Executive Director	कार्यपालक निदेशक
Exigencies of work	कार्यहित
Exit	निर्गम
Ex-officio	पदेन
Ex parte	एकपक्षीय
Faculty	संकाय
Fair copy	स्वच्छ पत्र
File	मिसिल
File movement	मिसिल संचलन
Finance advisor	वित्त सलाहकार
Financial year	वित्तवर्ष
Fund	निधि
Fund provident	भविष्य निधि
Gazette	राजपत्र
Gazetted	राजपत्रित
Gazetted Holiday	राजपत्रित छुट्टी
Gazetted officer	राजपत्रित अधिकारी
General Manager	महाप्रबन्धक
Governor	राज्यपाल
Grant	अनुदान

Guidance	संदर्शन
Headquarter	मुख्यालय
Health inspector	स्वास्थ्य अधिकारी
Honorarium	मानदेय
Honorary	अवैदनिक
Identity card	पहचान पत्र
Income tax	आयकार
Initials	आद्यक्षर
Interest	ब्याज
Interim letter	अतरिम उत्तर
Investigator	अन्वेषक
Invoice	बीजक
Issue	निगम, जारी करना
Joining date	कार्यग्रहण तारीख
Joint director	संयुक्त निदेशक
Judicial	न्यायिक, अदालती
Judiciary	न्यायपालिका
Junior	कनिष्ठ, अवर
Jurisdiction	क्षेत्राधिकार
Leave	अवकाश, छुट्टी
Leave Earned	अर्जित छुट्टी
Leave Extraordinary	असाधारण छुट्टी
Leave Maternity	प्रसूति छुट्टी
Leave Restricted	वैकल्पिक, प्रतिबंधित सीमित
Legislature	विधायिका
Liaison officer	संपर्क अधिकारी
License	अनुज्ञप्ति
Lien	पूर्वग्रहणाधिकार
Life insurance corporation	जीवन बीमा निगम
Lower division clerk	अवर श्रेणी लिपिक

Mailing list	डाक सूची
Maintenance	अनुरक्षण
Man power directorate	जनशक्ति निदेशालय
Management	प्रबंधन, व्यवस्था
Manager	प्रबंधक
Managing Director	प्रबंधक निदेशक
Mandate	अधिदेश
Mayor	महापौर
Migration certificate	प्रवास अधिकारी
Minister	मंत्री
Minister Chief	मुख्यमंत्री
Minister Deputy	उपमंत्री
Minister Prime	प्रधानमंत्री
Minister of State	राज्य मंत्री
Minister without portfolio	निर्विभाग मंत्री
Ministry	मंत्रालय
Minutes	कार्यवृत्त
Misappropriation	दुर्विनियोग
Mobile squad	चलदस्ता
Modus operandi	कार्यप्रणाली
Motion	प्रस्ताव
Motto	आदर्शवाक्य
Municipality	नगरपालिका
Needful	आवश्यक कार्रवाई
No demand certificate	बेबाकी पत्र
No objection certificate	अनापत्ति पत्र
Non-gazetted	अराजपत्रित
Non-official	गैर-सरकारी
Nominated	मनोनीत

Notification	अधिसूचना
Oath	शपथ
Officer in charge	प्रभारी अधिकारी
Office Memorandum	कार्यालय ज्ञापन
Officer on special duty	विशेष कार्याधिकारी
Official	शासकीय, सरकारी
Officiating	स्थानापन्न
On Probation	परिवीक्षाधीन
Panel	नामिका
Parliament	संसद
Part time	अंशकालीन
Passport	पारपत्र
Pay scale	वेतनमान
Payment clerk	भुगतान लिपिक
Pending	लंबित, रुका हुआ
Peon	चपरासी
Petition	अर्जी नवीस
Plan	योजना
Plumber	नलसाज
Post	पद
Posting	तैनाती
Postpone	स्थगित करना
Prima facic case	प्रथम दृष्टि में प्रतीत मामला
Private	गैर सरकारी/ निजी
Procedure	कार्यविधि
Proceedings	कार्यवाही
Project	परियोजना
Promissory note	वचन पत्र
Promotion	पदोन्नति
Proposal	प्रस्ताव

Provisional	अनन्तिम
Qualification	योग्यता
Question hour	प्रश्नकाल
Quorum	गणपूर्ति
Ratio	अनुपात
Receipt	आवती
Recommendation	संस्तुति
Record	अभिलेख
Recruitment	भर्ती
Registrar	कुल सचिव, पंजीकार
Registration	पंजीकरण
Registration officer	पंजीयन अधिकारी
Reminder	स्मरण पत्र, अनुस्मारक
Representation	अभ्यावेदन, प्रतिनिधित्व
Representative	प्रतिनिधि
Reservation	आरक्षण
Resolution	संकल्प
Retirement	सेवानिवृत्ति
Retrenchment	छँटनी
Revenue stamp	रसीदी टिकट
Routine	नेमी
Salary	वेतन
Salesman	बिक्रीकर्ता
Sanction	स्वीकृति, मंजूरी
Satisfactory	संतोषजनक
Saving	बचत
Scale of pay	वेतन मान
Scheme	योजना
Screening committee	छानबीन समिति
Scrutinizer	संवीक्षक

Seal	मुद्रा
Secretary	सचिव
Secretary Additional	अपर सचिव
Secretary Deputy	उपसचिव
Secretary Joint	संयुक्त सचिव
Secretary Under	अवर सचिव
Secretariat	सचिवालय
Section	अनुभाग
Section officer	अनुभाग अधिकारी
Selection grade clerk	प्रवरण कोटि लिपिक
Seniority	वरिष्ठता
Service book	सेवा पंजी
Signature	हस्ताक्षर
Sine dine	अनिश्चित काल के लिए
Speaker of Lok Sabha	अध्यक्ष
Staff selection commission	कर्मचारी चयन आयोग
Standing committee	स्थायी समिति
Statement	विवरण
Statutory	सांविधिक
Stenographer	आशुलिपिक
Store keeper	भंडारी
Subordinate	अधीनस्थ
Substitute	स्थानापन्न
Superintendent	अधीक्षक
Supervisor	पर्यवेक्षक
Supplementary	अनुपूरक
Surety Bond	जमानतनामा
Survey	सर्वेक्षण
Suspension	निलंबन
Supervisor	पर्यवेक्षक

Technical	तकनीकी
Time table	समय-सारणी
Traffic	यातायात
Transfer	स्थानान्तरण, तबादला
Transport	परिवहन
Treasurer	कोषाध्यक्ष, खजांची
Treasury	कोष, खज़ाना
Typist	टंकक
Undertaking	उपक्रम, वचनबद्धता
Verification	सत्यापन
Verification officer	सत्यापन अधिकारी
Vice chancellor	कुलपति
Vice president	उपराष्ट्रपति, उपाध्यक्ष
Vigilance officer	सतर्कता अधिकारी
Watcher	चौकीदार
Warrant	अधिपत्र
Whip	सचेतक
Zerohour	शून्यकाल

<u>वाणिज्यिक</u>

Accessory	उपसाधक,सहसाधन
Account, Current	चालू खाता
Account, Fixed deposit	सावधिक जमा खाता
Account, Saving bank	बचत बैंक खाता
Account day	निपटारा दिन
Adjustment	समायोजना
Advertisement	विज्ञापन
Annual return	वार्षिक विवरणी
Annuity	वार्षिकी

Ante dated cheque	पूर्वतिथीय चेक
Appreciation	मूल्य वृद्धि
Assets	परिसंपत्ति
Assurance	आश्वासन
Auction	नीलाम
Balance sheet	तुलनपत्र
Banking	अधिकोषण
Bond	बंधपत्र
Bonded deal	अनुबद्ध सौदा
Bonus	लाभांश
Borrowed note	जमानती रुक्का
Breakage	टूट-फूट
Broker	दलाल
Brokerage	दलाली
Buffer stock	सुरक्षित भंडार
Bumper crop	जोरदार फसल
Call deposit	माँग जमा
Carrying over	आगे ले जाना
Cash book	रोकड़ वही
Chamber of Commerce	वाणिज्य मंडल
Claiment	दावेदार, दावी
Clearance	निकासी, छुड़ाना
Clearing	निकासी, समाशोधन
Client	ग्राहक
Closed mortgage	एकल ऋण बंधन
Collection	उगाही, वसूली
Commercial Bank	वाणिज्य बैंक
Controller and Auditor General	नियंत्रक और महालेखापरीक्षक
Consignee	परेषिती, माल पाने वाला

Consignment	परेषण
Consumer	उपभोक्ता
Consumption	उपभोग, खपत
Contract	संविदा, ठेका
Credit	उधार, जमा
Creditor	ऋण दाता, लेनदार
Crossed cheque	रेखित चेक
Currency	मुद्रा
Currency and Mint	मुद्रा और टकसाल
Custodian	अभिरक्षक
Custom duty	सीमा शुक्ल
Damage	हर्जाना, क्षतिपूर्ति
Dead Security	रद्द ऋणपत्र
Debenture	ऋणपत्र
Debtor	ऋणी, लेनेदार
Deduction	कटौती
Deed of scale	बिक्री पत्र
Dispatcher	प्रेषक
Demurrage	विलंब शुक्ल
Deposit	जमा, निक्षेप
Depositor	जमाकर्ता
Depreciation	अवमूल्यन
Disbursement	संवितरण, बाँटना
Discharged bill	चुकाई हुंडी, चुकाया बिल
Discount	बट्टा, छूट
Dishonoured	अस्वीकृत, अनादृत
Dividend	लाभांश
Down payment	तत्काल अदायगी
Drawee	अदाकर्ता

Earnest money	बयाना, धरोहर राशि
Encashment	भुनाना, तुड़ाना
Enterprise	उद्यम
Equity	सामान्य शेयर
Exchange	विनिमय
Exemption	छूट
Factor	आढ़तिया
Fire insurance	अग्नि बीमा
Fixed deposit	सावधि निक्षेप
Floatation	ऋण चालू करना
Guarantee	प्रत्याभूति, गारंटी
Hard Cash	नगदी
Hard Currency	दुर्लभ मुद्रा
Higgling	भाव-ताव, मोल-तोल करना
Hypothetication of goods	माल बंधक रखना, माल रेहन रखना
Import	आयात
Indemnity Bond	क्षतिपूर्ति बंधपत्र
Indigenous Bank	देशी बैंक
Inflation	स्फीति
Insolvency	दिवालापन
Insolvent	दिवालिया
Insurance	बीमा
Investment	निवेश
Land mortgage Bank	भूमि बंधक बैंक
Lean year	मंदा वर्ष
Lease rental	पट्टा किराया
Ledger	लेखा खाता
Letter of Credit	साखपत्र
Liability	दायित्व, देयता

Liasion Officer	संपर्क अधिकारी
License	अनुज्ञप्ति
Liquidation	परिसमापन
Market Price	बाज़ार भाव
Marketing	विपणन, खरीदारी
Merchandising	क्रय-विक्रय
Middleman	बिचौलिया
Monopoly	एकाधिकार
Moratorium	भुगतान स्थगन, भुगतान विलंबन
Nomination	नामांकन
Out put	पैदावार
Out station cheque	बाहरी चेक
Outward clearing	निर्गामी समाशोधन
Over payment	अधिक अदायगी
Pawn	गिरवी
Premium	प्रीमियम
Promisory note	रुक्का, प्रतिज्ञा पत्र
Quotation	निर्ख, मूल्य कथन
Quorum	गणपूर्ति
Rebate	छूट
Refund	धन वापसी
Remuneration	पारिश्रमिक, मेहनताना
Returns	वापस माल, वापस हुंडी
Sample	नमूना, प्रतिदर्श
Saturation	संतृप्ति
Small Saving	लघु बचत
Strong Room	सुरक्षित कक्ष
Subsidy	आर्थिक सहायता
Super tax	अधिकार

Surcharge	अधिभार
Tabulation	सारणीकरण
Tally roll	मिलान पत्रक
Taxation	कराधान
Tender	निविदा
Warehouse	मालगोदाम, भांडागार
Wholesaler	थोक व्यापारी
Winding up	समापन, समेटना
Withdrawn bill	निकाली गई राशि
Write off	बट्टे खाते डालना
Yield	उत्पत्ति, प्राप्ति

मानविकी

Abnormal	अपसामान्य
Absolutism	परमवाद, निरपेक्षवाद, ब्रह्मवाद
Acculturation	संस्कृति ग्रहण
Adulteration	अपरिश्रण
Aesthetics	सौंदर्यशास्त्र
Agency	अभिकरण
Ambassador	राजदूत
Analogy	सादृश्य, अनुरूपता
Anarchism	अराजकतावाद
Anthropology	मानव विज्ञान
Aptitude	अभिरुचि, अभिक्षमता
Attitude	अभिवृत्ति
Autocratic	एकतंत्रीय, निरंकुश
Behaviourism	व्यवहारवाद
Bureaucracy	नौकरशाही, दफ्तरशाही
Ceiling	उच्चतम सीमा

Census	जनगणना
Charter	अधिकार पत्र
Class struggle	वर्ग संघर्ष
Coalition government	संयुक्त सरकार
Comedy	कामदी
Concept	संकल्पना, संप्रत्ययन, अवधारणा
Constitution	संविधान
Criterion	प्रतिमान, निकष
Criticism	समालोचना, समाक्षा
Decontrol	विनियंत्रण
Democracy	लोकतंत्र, प्रजातंत्र
Diagnosis	निदान
Devaluation	मूल्यह्रास
Diplomacy	कूटनीति
Egoism	अहंवाद
Encroachment	अतिक्रमण, अवैध कब्ज़ा
Environment	पर्यावरण, परिवेश
Epic	महाकाव्य
Escapist	पलायनवादी
Estate duty	संपदा शुक्ल
Ethics	नीतिशास्त्र
Excavation	खुदाई
Extrovert	बहिर्मुखी
Fanaticism	धर्मांधता, मतांधता
Folklore	लोककथा
Genealogy	वंशावली
Gradation	स्तरीकरण, श्रेणीकरण
Hereditary	पैतृक
Idealism	आदर्शवाद, प्रत्ययवाद

Intuition	अंतःप्रज्ञा, प्रतिभा ज्ञान
Investigation	अन्वेषण
Journalism	पत्रकारिता
Learning	सीखना, अनुशिक्षण
Lecturer	प्राध्यापक, व्याख्याता
Linguistics	भाषाविज्ञान
Lockout	तालाबंदी
Logic	तर्कशास्त्र
Mass media	जनसंचार
Materialism	भौतिकवाद
Metaphysics	तत्व मीमांसा
Ominipotence	सर्वशक्तिमत्ता
Omnipresence	सर्वव्यापिता
Omniscience	सर्वज्ञता
Optimism	आशावाद
Pessimism	निराशावाद
Poetics	काव्यशास्त्र
Population	जनसंख्या
Principal	प्राचार्य, प्रधानाध्यापक
Projective	प्रक्षेपी
Professor	आचार्य
Psychology	मनोविज्ञान
Puritan	शुद्धतावादी
Reader	उपाचार्य, प्रपाठक, पाठक
Rhetoric	अलंकारशास्त्र, रीतिशास्त्र
Relativism	सापे वाद
Socialism	समाजवाद
Scepticism	संशयवाद
Subconscious	अवचेतन

Talent	अभियोग्यता
Tragedy	त्रासदी
Transformation	रूपांतरण
Voluntary	स्वैच्छिक

विज्ञान

Abdomen	उदर
Absorbent	अवशोधक
Accelerator	त्वरक
Acoustics	ध्वनिविज्ञान
Aeronautics	वैमानिकी, विमान विज्ञान
Amplifier	प्रवर्धक
Amputation	अंगोच्छेदन
Anaemia	रक्तक्षीणता
Anaesthesia	संज्ञाहरण
Antibiotic	प्रतिजैविक
Anatomy	शरीर रचना, शरीर रचना विज्ञान
Astrophysics	खगोल भौतिकी
Atom	परमाणु
Audio-visual	दृश्य-श्रव्य
Aviation	विमानन
Bio-chemistry	जीव रसायन
Biophysical	जैवभौतिक
Bio-statistics	जैव-सांख्यिकी
Bio-technology	जीव प्रायोगिकी
Botany	वनस्पति विज्ञान
Breeding	प्रजनन
Catalyst	उत्प्रेरक
Chemistry	रसायनिकी, रसायन विज्ञान

Circumference	परिधि
Commerce	वाणिज्य
Computer science	संगणक
Condensation	द्रवण, संघनन
Cosmology	विश्व विज्ञान
Crew	कर्मीदल
Decan hemp	पटसन, सनकोकड़ा
Density	घनत्व
Diagnosis	निदान
Drug Addiction	मादक व्यसन
Earthwire	भूतार
Ecology	परिस्थिति विज्ञान
Economics	अर्थशास्त्र
Electric locomotive	विद्युत इंजन
Electrocution	विद्युत मारण
Energy	ऊर्जा
Engineering	अभियांत्रिकी, इंजीनियरी
Expiration	निःश्वसन
Fossil	जीवाश्म
Fleet	बेड़ा
Flue pipe	चिमनी
Generator	जनित्र, प्रजनक
Genetic	आनुवांशिक, जननिक
Geology	भूविज्ञान, भौमिकी
Hardware	यंत्र सामग्री
Hypertension	अतितनाव
Information technology	सूचना प्रौद्योगिकी
Instrument	उपकरण
Intern	अंतःशिक्षु, स्थानबद्ध

Isotope	समस्थानिक
Landing	उतराई, अवतरण, उतरना
Light year	प्रकाश वर्ष
Magnetosphere	चुंबक मंडल
Malnutrition	कुपोषण
Mathematics	गणित
Mechanism	यांत्रिकी
Microwave	सुक्ष्मतरंग
Navigation	नौचालन
Neurosis	मनस्ताप
Nucleus	नाभिक, केन्द्रक
Nutrition	पोषण
Obstetrics	प्रसूतिविद्या
Ontogeny	व्यक्तिवृत्त
Operation	संक्रिया, परिचालन
Optics	प्रकाशिकी
Oscillation	दोलन
Parasite	परजीवी
Pathology	रोगविज्ञान
Physics	भौतिकी, भौतिक विज्ञान
Political science	राजनीति विज्ञान
Product	उत्पादन, गुणनफल
Radiation	विकिरण
Radiologist	विकिरण विज्ञानी
Response	अनुक्रिया
Satellite	उपग्रह
Software	प्रक्रिया सामग्री
Sociology	समाज विज्ञान
Statistics	सांख्यिकी

Stimulus	उद्दीपन
Supersonic	पराध्वनिक
Symptom	लक्षण
Synthesis	संश्लेषण
Take off	आरोहण, उड़ान भरना, अपरितरण
Technology	प्रौद्योगिकी
Tissue	ऊतक
Vibration	कंपन
Zoology	प्राणिविज्ञान

उपाधियाँ

Bachelor of arts (B. A)	कला स्नातक
Bachelor of business Administration (B.B.A)	व्यसाय प्रशासन स्नातक
Bachelor of commerce (B.Com)	वाणिज्य स्नातक
Bachelor of education (B.Ed)	शिक्षा स्लातक
Bachelor of engineering (B.E)	इंजीनियरी स्नातक
Bachelor of home science (B.H.Sc)	गृह वीज्ञान स्नातक
Bachelor of journalism and communication. (B.J.C)	पत्रकारिता एवं संचार स्नातक
Bachelor of law (L.LB.B/B.C)	विधि स्नातक
Bachelor of library and information science (B.L.I.Se)	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान स्नातक
Bachelor of library science (B.L.Sc/B.Lib/B.Lib.Sc)	पुस्तकालय विज्ञान स्नातक
Bachelor of nursing (B.Nur)	परिचर्या स्नातक
Bachelor of pharmacy (B.Pharm.)	भेषजी स्नातक
Bachelor of physical education (B.E.P)	शारीरिक शिक्षा स्नातक
Bachelor of physiotherapy (B.Physio)	शारीरिक चिक्त्सा स्नातक
Bachelor of science (B.Sc)	विज्ञान स्नातक
Bachelor of theology (B.Th)	धर्मशास्त्र स्नातक
Bachelor of social science (B.s.W)	सामाजिक कार्य स्नातक
Certificate	प्रमाण पत्र
Diploma	डिप्लोमा सनद
Doctor of letters (D.Litt/ Li.H.D)	साहित्य वाचस्पति
Intermediate	मध्यमा
Master of arts (M.A)	कला निष्णात
Philosophy (Ph.D/D.Phil)	विधा वाचस्पति

UNIT - 21

यंत्रानुवाद (मशीनी अनुवाद)

यंत्रानुवाद की दिशा में पिछले दशकों से किए गए प्रयास तो सभी कप्यूटर पर आधारित है। सबसे पहले एक रूसी इंजिनियर 'पत्रे पोत्रोविच्च स्मिरनोव प्रोयस' की 1933 में अनुवाद करनेवाले एक यंत्र का नमूना बनाया था। यह यंत्र कंप्यूटर युक्त नहीं था। इसके लगभग दस वर्ष बाद कंप्यूटर के आधार पर अनुवाद करनेवाला यंत्र वनाने की दिशा में कार्य प्रारंभ हुआ। इस दिशा में लंदन(London) के डॉ.ए.डी.बूथ का नाम लिया जाता है। इंग्लैंड में कई लोगों ने इस कल्पना को साकार करने केलिए प्रयास शुरू किया। इस दिशा में 'वारेन वीवेर रिचेंस' आदि का योगदान सराहनीय है।

यंत्रानुवाद के क्षेत्र में यंत्रकोश (automatic dictionary) का उल्लेख किया जाता है। पूरा कोश अंकों में है, अक्षरों में नहीं। कंप्यूटर अंकों के आधार पर काम करता है। हर भाषा में शब्द संख्या बहुत बडी होती है। 'डॉ.रीफ्तर' ने यंत्रानुवाद के क्षेत्र में एक नया काम शुरू किया। उन्होंने सोचा कि यंत्र पूरी तरह अनुवाद का काम नहीं कर सकता। किन्तु वह अनुवाद में आदमी की मतत कर सकता है। 1950 के आसपास यंत्रानुवाद के क्षेत्र में काम करनेवालों ने यत्रों को ऐसा बनाने पर बल दिया कि वह स्वयं भाषा के वाक्यों का ठीक विश्लेषण कर सके। 1952 'ओसवाल्ड' तथा फ्लेचर ने जर्मन के वाक्यों के यांत्रिक विश्लेषण इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया।

अमरिका में इस विषय में अग्रणी नाम 'बार हिलेल' का रहा है। उन्होंने स्वयं चलित यंत्र द्वारा अच्छे अनुवाद का कार्य किया। यंत्रनुवाद के विरोध में उनके दिये गये अनेक तर्कों का उत्तर नहीं दिया जा सका। वस्तुतः अनुवाद केवल एक भाषा के शब्दों आदि के स्थान पर दूसरी भाषा के शब्दों आदि को रख देता है। जैसी सात्विक क्रिया नहीं है। अच्छे अनुवाद अनुवादक का जीवन अनुभव, दोनों भाषाओं की संस्कृति का ज्ञान तथा सामग्री के हर वाक्य के सन्दर्भ के प्रति उसकी जागरूकता जैसी मानसिक बातों पर आधारित है। लेकिन इनकी आशा यंत्र से नहीं की जा सकती।

यंत्रानुवाद के क्षेत्र में जापान में एक ऐसी मशीन बनायी गयी है जो न केवल अनुवाद कर सकता बल्कि अनुवाद को बोल भी सके। इस यंत्र का नाम है वी.आर.ए(Voice Replaying Apparatics) यह यंत्र टोकियो विश्व विद्यालय के यांत्रिकी विभाग ने बनाया था। इसमें अंग्रेज़ी सामग्री टाईप करते हुए भरी जाती थी और यह यंत्र उसका तुरन्त अनुवाद करके एक कागज़ पर लिख लेता था। तथा उसे बोल भी देता था। किन्तु जापान का यह प्रयास अत्यन्त सीमित वाक्यों का सामान्य अनुवाद करने में ही समर्थ रहा।

जहाँ तक हिन्दी का प्रश्न है। हिन्दी-फ्रांसीसी की दिशा में फ्रंस में तथा हिन्दी-रूसी की दिशा में 'सोबियत संघ' में कुछ काम हुआ है। किन्तु यह काम आगे नहीं बढ पाये। कई स्थानों पर यंत्रानुवाद का प्रयास प्रायः छोड दिया है। कुल मिलाकर यंत्रानुवाद को असंभव तो नहीं कहा जा सकता। किन्तु निकट भविष्य में इसके संभव होने की संभावना भी नहीं है। प्रदर्शन केलिए इसप्रकार की छोटी-मोटी मशीन बने हैं। इससे सीमित शब्दों के सीमित संरचनावाले, सीमित वाक्यों का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है।

UNIT - 22

पुनरीक्षण(vetting)

पुनरीक्षण का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है, पुनः+ईक्षण अर्थात् फिर से देखना। हिन्दी में यह शब्द किसी अनुवाद के संशोधन केलिए प्रयुक्त किया जाता है। अतः कोई व्यक्ति अनुवाद करके अपने अनुवाद को एक बार देख चुका है, दूसरा व्यक्ति अर्थात् पुनरीक्षक इसको फिर से देखता है, अनुवाद का पुनःईक्षण करता है, यही है पुनरीक्षण। पुनरीक्षक पर बहुत अधिक दायित्व है। अनुवादक को पुनरीक्षक द्वारा दिया गया अंतिमरूप अर्थात् पुनरीक्षित रूप स्वीकार करना चाहिए। अनुवाद और पुनरीक्षक एक से न होकर एक दूसरे के पूरक होते अधिक अच्छा होता है। इस संबन्ध में मुख्यरूप से कुछ बातें कही जा सकती है। यदि किसी बंगला भाषी अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करते हैं तो उसका अनुवाद बंगला से प्रभावित हो सकता है। उसका पुनरीक्षक बंगला भाषी न होकर कोई अन्य-भाषा-भाषी होना अच्छा है। पुनरीक्षक यदि अनुवादक की बोली या भाषा बोलनेवाला न होकर किसी अन्य बोली या भाषा-भाषी अपना काम अच्छा कर सकेगा। ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद सहयोग से हो, तभी अधिक अच्छा। अर्थात अनुवाद की विषय में अच्छी गति हो और स्रोता को लक्ष्य भाषा में अच्छी जानकारी भी। इसप्रकार ज्ञान की दृष्टि से भी अनुवादक और पुनरीक्षक को एक दूसरे का पूरक होना चाहिए।

सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद का भी अनुवादक और पुनरीक्षक एक सा नहीं होना चाहिए। पुनरीक्षक को अनुवाद का पुनरीक्षण विषय और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टियों से करना चाहिए। आदर्श स्थिति यही होते हैं कि कोई सर्जन प्रतिभाकार धनी अनुवाद करें तथा कोई अच्छा अनुवादक उसका पुनरीक्षण करें। अनुवाद में अनुवादक की शैली आ सकती है। लेकिन पुनरीक्षक को अपनी शैली लाने का यत्न नहीं करना चाहिए।

UNIT - 23

भाषान्तरण

दो व्यक्ति यदि अलग अलग भाषायें बोलते हैं तो उनके बीच बातचीत नहीं हो सकते। इस कठिनाई को दूर करने केलिए जिस व्यक्ति की सहायता ली जाती है उसे दुभाषीया या भाषान्तरकार कहते हैं, तथा उसके काम को भाषान्तरण कहते हैं। भाषान्तरकार की गति दो भाषाओं में होती है। वह एक की बात सुनकर उसका तुरन्त अनुवाद करके दूसरे को सुना देता है। फिर दूसरे का उत्तर का अनुवाद करके उससे पहले को अवगत करा देता है उस तरह वह बातचीत का माध्यम बन जाता है।

दुभाषिया अनुवादक ही होता है। किन्तु उसका दायित्व अनुवादक से कहीं अधिक होता है। अनुवादक मूल सामग्री को समझने केलिए शब्दकोश की सहायता ले सकता है। किन्तु दुभाषिया केलिए यह संभव नहीं है। अनुवादक आवश्यक होने पर मूल सामग्री के संबन्ध में किसी अन्य व्यक्ति से चर्चा कर सकता है। किन्तु दुभाषियों को इसकी सुविधा नहीं होती। अनुवादक के पास अनुवाद करने के लिए पर्याप्त समय होता है। किन्तु दुभाषियों के पास बहुत सीमित समय होता है। दुभाषियों के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक होते हैं –

दोनों भाषाओं में प्रयोग नियम तथा शब्द भंडार आदि की दृष्टि से दुभाषियों को बहुत अच्छी जानकारी होनी चाहिए। उसकी श्रवण शक्ति बहुत अच्छी होनी चाहिए। उसका उच्चारण भी बहुत अच्छा होनी चाहिए।गलत उच्चारण से कभी-कभी अर्थ का अनर्थ हो जाता है। दुभाषियों को बहुत खबरानेवाला नहीं होना चाहिए। अनिवार्य होने पर बिना संकोच दुभाषियों को वक्ता से उस विन्दु को स्पष्ट कर लेना चाहिए जो समझ में न आ रहा हो। अत्यन्त अपेक्षित होने पर दुभाषिया वक्ता से यह संकेत कर सकता है कि धीरे-धीरे बोलने से दुभाषिये का काम सरल हो जायेगा। दुभाषियों को अनुवाद छोटे-छोटे वाक्य में करके धीमी गति से बोलना चाहिए। दुभाषिये को अपेक्षित होने पर भावानुवाद करने से नहीं हट जाना चाहिए। बहुत सटिक, आदर्श तथा सुसंतुलित अनुवाद करना हमेशा दुभाषिये केलिए संभव नहीं होता। इसप्रकार भाषान्तरण अनुवाद क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य है।

UNIT - 24

हिन्दी में अनुवाद चिन्तन

यूरोप और अमरिका में अनुवाद के क्षेत्र में काफी चिन्तन हुआ है। किन्तु एशिया, अन्य क्षेत्रों की भाँति इसमें भी काफी पीछे हैं। भारतीय भाषाओँ में हिन्दी, मराठी तथा बंगला में ही अनुवाद की दिशा में थोडा चिन्तन हुआ है। हिन्दी में यह मुख्यतः चार रूपों में मिलते हैं।

1. अनुवाद की भूमिका के रूप में
2. स्वतंत्र लेखों के रूप में
3. थीसिस के रूप में
4. स्वतंत्र पुस्तक के रूप में

अनुवाद की भूमिका के रूप में

पुराने तथा नये अनुवादकों ने विभिन्न अनूदित ग्रंथों की भूमिकाओं में अनुवाद के विषय में अनेक मत प्रकट किये हैं। जैसे जगमोहन सिंह, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल तथा बच्चन आदि के मत।

स्वतंत्र लेखों के रूप में

अनुवाद संबन्ध में स्वतंत्र लेख सरस्वती पत्रिका, नवभारत टाईम्स, अनुवाद, हिन्दुस्तान आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर निकलते रहे हैं। 'अनुवाद कला: कुछ विचार' शीर्षक से प्रभाव , जैनेन्द्रकुमार, राजेन्द्र, द्विवेदी जैसे सोलह व्यक्तियों के सोलह लेखों का संग्रह 1964 में पुस्तकाहार प्रकाशित हुआ था।

थीसिस के रूप में

हिन्दी में अनुवाद से संबन्धित कुछ थीसिस भी निकले हैं। डॉ.जैनेन्द्रकुमार के 'संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद', डॉ.नागनि चन्द्र सहगल का 'अंग्रेज़ी काव्य कृतियों में अनुवाद' आदि उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्र पुस्तक के रूप में

किसी एक व्यक्ति द्वारा लिखित स्वतंत्र पुस्तक के रूप में अनुवाद चिन्तन का कार्य संपन्न हुआ है। सन्1964 में डॉ. वासुदेव नन्द प्रसादजी की 'हिन्दी अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग' शीर्षक एक छोटी सी पुस्तक प्रकाशित हुई थी। डॉ.भोलानाथ तिवारी की 'अनुवाद विज्ञान', डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया का 'अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग', डॉ. गोपीनाथन का 'अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग' आदि भी स्वतंत्र पुस्तक के रूप में उल्लेखनीय हैं। हिन्दी में अनुवाद, चिन्तन, विकास की दिशा पर अग्रसर है। आजकल अनुवाद के महत्व को मान्यता देते हुए नये-नये मनीषी इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आशा है कि निकट भविष्य में हिन्दी में अनुवाद चिन्तन अन्य भाषाओं के समकक्ष रह जायेगा।

सांस्कृतिक अनुवाद (Cultural Translation)

सांस्कृतिक अनुवाद में सबसे अधिक कठिनाई होती है। हर संस्कृति की कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं। अतः उन विशेषताओं के अनुरूप उस संस्कृति की भाषा में कुछ विशिष्ट शब्द और अभिव्यक्तियाँ होती हैं। ऐसे शब्दों

और अभिव्यक्तियों का अनुवाद करना मुश्किल की बात है। जैसे – हिन्दी में द्रौपदी का चीर, भीष्म प्रतिज्ञा, सोने की लंका आदि । अंग्रेज़ी में डमाक्लसेस स्वोर्ड (Democlese's sword) आदि भी ऐसी अभिव्यक्ति है। इसप्रकार कुछ वस्तुओं का नाम भी होता है, जो अननुवादेय होते हैं। उदाहरण केलिए जनेऊ शब्द जिसको अंग्रेज़ी, रूसी या जापानी में अनूदित करना कठिन है। रिश्तों की नामों की भी यहीं स्थिति है।

अंग्रेज़ी के Uncle और Aunt को भारतीय भाषाओं में कहना कठिन है तो हिन्दी के मामा, नाऊ, काका, मौसा आदि को अंग्रेज़ी में कहना भी कठिन है। हमारे देश की भाषाओं में भी यह समस्या मिलती है। उदाहरण केलिए हिन्दी में नेहरू चाचा कहती है, किन्तु चाचा का मलयालम संस्कृति में उतना आदरशपूर्ण स्थान नहीं है, जितना मामा का। इसलिए चाचा नेहरू को मलयालम में मामा नेहरू कहते हैं। यों मामा केलिए मलयालम में दो शब्द है – मामन और अम्मावन। इनमें दूसरा शब्द अपेक्षाकृत और भी आदरार्थ है। अतः नेहरू को मलयालम में नेहरू अम्मावन भी कहते हैं।, नेहरू मामन अपेक्षाकृत कम है।

प्रेमचन्द के कफन कहानी में कुल्हट शब्द आया है। इस कहानी के अंग्रेज़ी में चार अनुवाद हैं तथा चारों में कुल्हट केलिए क्रमशः vine glass, cup, jug तथा vine cup रहा गया है। अच्छा यह होता है कि ऐसी स्थिति में अनुवाद में मूल शब्द देकर भूमिका में या पुस्तक के अंत में सांस्कृतिक शब्द सूचि में ऐसे शब्दों को समझा दे तथा आवश्यक होने पर चित्र भी दें। सांस्कृतिक अनुवाद में सामान्य अनुवादकार काम चलाउ अनुवाद से ही सन्तोष करना पडता है। यहाँ सठीक अनुवाद नहीं कर सकता।

UNIT - 25

अनुवाद और कंप्यूटर

टोकियो की एक फंम(company) में जापानी-अंग्रेज़ी अनुवाद का एक कंप्यूटर यंत्र तैयार किया है। यह यंत्र एक घंटे में तीन हज़ार शब्दों का अनुवाद प्रस्तुत करता है। परन्तु इस प्रकार किया अनुवाद एकदम सुनिश्चित नहीं होता। अनुवाद कार्य में प्रायः Digital Computers (डिजिटल कंप्यूटरों) का प्रयोग किया जा रहा है। इसके प्रयोग की दिशा में आशातीत सफलता मिली है। कंप्यूटर में सबसे महत्वपूर्ण कार्य होते हैं C.P.U(Central Processing Unit, केन्द्रीय प्रक्रिया इकाई)। इसमें विभिन्न भण्डार होते हैं। यंत्र के स्मरण करने की शक्ति पर सबकुछ निर्भर करता है। जिसको 'मेम्मरी' कहते हैं।

अनुवाद कार्य केलिए ऐसे कंप्यूटर की आवश्यकता है। जिसके माध्यम से एक भाषा दूसरी भाषा में परिवर्तित की जा सकें। इन दोनों भाषाओं के मध्य माध्यम होगा तो दोनों भाषाओं को जानते हैं। यह माध्यम ही तकनीकी शब्दावली में दुभाषिया के रूप में जाना चाहता है। Digital Computers सिर्फ निर्देश दिये गये कामों को भी करता है। जब मशीन को करने के लिए किसी काम का निर्देश कार्यक्रम देते हैं, तब उसको 'Programming' कहा जाता है। भारत में हिन्दी के सन्दर्भ कंप्यूटर से अनुवाद का भविष्य उज्वल है। अनुवाद के लिए कंप्यूटर का प्रयोग हो रहा है। हिन्दी के वैज्ञानिकों और टेक्नीशियनों को उस दिशा में समय के साथ अग्रसर होना चाहिए। फलतः हिन्दी और हमारी दूसरी भाषायें पिछड न जायेगी।

UNIT - 26

अनुवाद में मातृभाषा का प्रयोग

मातृभाषा से हिन्दी में अनुवाद करते समय तथा हिन्दी से मातृभाषा में अनुवाद करते समय कई समस्याओं से जूझना पडता हैं। भारतीय भाषाओं के वर्णों की संख्या में स्पष्ट अन्तर है। वर्णों का उच्चारण भिन्न होता है। सहज प्रवृत्ति यह होती है कि हम मातृभाषा में जैसा उच्चारण करते है वैसे ही लिप्यंतरण करना चाहिए था। किन्तु लक्ष्य भाषा की लेखन व्यवस्था इससे भिन्न रहती है। ऐसी दिशा में या तो अतिरिक्त चिह्नों से मूल भाषा के शब्दों का सही लिप्यंतरण करना चाहिए था। लक्ष्य भाषा की लिपियों में लिप्यंतरित करके उससे संतुष्ट होना चाहिए। भारतीय भाषाओं को जोडनेवाली एक कडी तत्सम शब्दों की है। हम अपनी भाषा में तत्सम शब्दों को इस ढंग से लिखने के आदी है इसी से अनुवाद में भी लिखने की प्रवृत्ति होती है। मराठी भाषी और मलयालम भाषी हिन्दी में अनुवाद करते समय तत्सम शब्दों को हिन्दी में भी अपनी भाषा की ढंग से लिखें तो यह सहज ही है।

विदेशी भाषाओं के शब्दों को प्रायः सभी भारतीय भाषाओं ने स्वीकार किया है। किन्तु उसमें अलग तरीका स्वीकार किया गया है। जैसे अंग्रेज़ी 'Nile' मलयालम में 'नैल' और हिन्दी में 'नील' कहे जाते हैं। इसी प्रकार Hospital – ആശുപത്രി - अस्पताल। मातृभाषा के प्रभाव की दृष्टि से अनुवादक अर्थप्रकरण में अधिक उलझता है। अनुवादक अपनी मूल भाषा में जिस अर्थ से परिचित है, लक्ष्य भाषा में भी उसी अर्थ का प्रयोग करना चाहिए। मूल भाषा के शब्दों से जितना व्यापक, विशिष्ट या गहरा अर्थ इसमें व्यंजित किया जाता है, उतना अनूदित भाषा में हमेशा पाया नहीं जाता। इसका मुख्य कारण सांस्कृतिक रूढ़ी है। प्रेत्येक भाषा के क्षेत्र में अपनी परंपरायें होती है। मातृभाषा के व्याकरण और लक्ष्य भाषा के व्याकरण के अंतर पर भी विचार करना चाहिए। कारक के प्रयोग में भी प्रत्येक भाषा का क्रम भिन्न-भिन्न रहता है। शब्द, रूप संबन्धी समस्या सुलझने के बाद भी वाक्य रचना के क्षेत्र में मातृभाषा का प्रभाव पडने की संभावना है। मातृभाषा के प्रभाव से बचने के लिए उसके संस्कार से बचा रहना एक उपाय है।

अनुवाद की शुद्धता और सरलता का प्रमाण यहीं है कि शुद्ध लक्ष्य भाषा – भाषी आसानी से उसे समझ सकें। कहीं उसे बात खरकती है तो अनुवादक को सुधारना चाहिए।

UNIT - 27

हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद

1. भारत एक विशाल देश है । यहाँ बाईस राष्ट्रभाषाएँ बोली जाती हैं जिनके लिए माद्यम के रूप में एक भाषा होनी चाहिए। हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने का कारण यह है कि बीस करोड जनता इसे व्यवहार में लाती है । हिंदी का करीब एक हज़ार वर्षों का साहित्य है जिसमें सूर, तुलसी, मीरा और भारतेन्दु से लेकर आधुनिक युग में जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला आदि कवियों द्वारा अपार भंडार भरा गया है । हिंदी की परंपरा राष्ट्रजीवन से भी सम्बन्धित है । इतिहास की दृष्टि से भी वह केंद्र की भाषा है । इसलिए उसका राजभाषा होना उचित ही है ।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अन्तर होता है। राजभाषा केंद्रीय एवं प्रदेश की सरकारों द्वारा परस्पर राजकाज की भाषा होती है । राष्ट्रभाषा वह है, जिसे सब जनता समभक्ति है । जो सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो ।

India is a vast country. There are Twenty Two National languages and it is necessary to have one language as a common medium. The reason why Hindi has been the official language is that twenty crores of people make use of this language. Hindi has a literature of nearly one thousand years. To this literature writing have been made by poets from Sur, Tulsi, Meera and Bhartendu to Prasad, Pant, and Nirala of the modern age, who all have contributed boundless treasures. The growth of Hindi is associated with the national life. From the historical point of view also it is the language of the Centre. Therefore it is right to consider it is the official language. There is a diference between official language and national language.The official language is that language which is used for the State affairs of both, the Centre and the States. The national language is that, which is understood by all the people and which is important from both, the social and cultural point of view.

2. साल का पहला दिन है । जो वर्ष कल तक था वह सदा के लिए चला गया है । अब वह वापस नहीं आयेगा । काल अनंत है । समय का प्रवाह अजस्त्र है, निरंतर है । पिछला साल बीत गया । अब नया साल चालू हुआ। लेकिन बीच में जोड दिखाई नहीं पडता है । जल धारा की तरह ही समय की धारा है । नदी बहकर अनंत समुद्र में विलीन होती है, फिर भी बहती रहती है । साल समाप्त होकर अनंतकाल में विलीन हो गया और नया साल शुरू हो गया । दिन, रात, पक्ष, मास और साल तो माप हैं । समय के नापने के पैमाने है । दिन-रात छोटे-बडे हो सकते है अर्थात माप छोटे-बडा हो सकता है लेकिन मापी जाने वाली चीज़ तो छोटी-बडी नहीं होती हैं । समय अनंत हें, अक्षय हैं ।

Today is New Year's Day. The year which was till yesterday has gone away for ever. It will never come back now. The corrent of time is incessant and ever lasting. The previous year has gone. The New Year has started now. But the joint in the middle is not visible. The flow of time is just like the corrent of the river. The river flows and vanishes in the endless ocean, even then it goes on flowing. The previous year has ended and vanished in the infinite time. Day, night, fortnight, month and year are the measures. They are to measure the eternal time. Day and night can be short or long, but the thing to be measured is neither short nor long. The time is infinite and everlasting.

3. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन अनिवार्य है। अनुशासन सैनिक जीवन की तो आत्मा ही है। इसके बिना सेना एक भीड़ से बढ़कर कुछ नहीं होती। यह पहली वस्तु है जिसकी परिवार में ताल-मेल तथा एकता- सूत्र को बनाऐ रखने के लिए आवश्यकता पड़ती है। समाज तथा राष्ट्र में शांति और एकता बनाए रखने के लिए भी अनुशासन समान रूप से आवश्यक है। अनुशासन के बिना मनुष्य जंगली पशु से बढ़कर कुछ नहीं। यदि प्रभु की सृष्टि में अनुशासन न हो, तो विश्व में अव्यवस्था फैल कर शीघ्र ही प्रलय-दश को प्राप्त हो जाय।

Discipline is very essential in every walk of life. Discipline is the soul of military life. Without discipline an army is no better than a crowd. It is the first thing needed for maintaining the harmony and concord in a family. It is equally necessary in maintaining peace and harmonious relations in a society's or in a nation. Without discipline men are no better than brutes. If there is no discipline in God's creation, chaotic conditions will prevail and this universe would come to topsyturvydom in no time

4. कुछ बालकों पर आज की शिक्षा और स्वतन्त्रता का गम्भीर प्रभाव पड़ता जा रहा है। बौद्धिक गुणों तथा सहानुभूतियों के व्यापक रूप से विकसित होने के कारण ऐसे लड़के स्वतन्त्रता का स्वागत करते हैं, जिसका कि वे उपभोग कर रहे होते हैं। ऐसा वे मन बहलाव वा खुशी के दृष्टिकोण से नहीं करते, वरन् इस प्रत्याशा में कि इससे उनकी एक व्यापक तथा गंम्भीर जीवन उपलब्ध होता है, जिससे उनकी एक बौद्धिक शक्तियों के विकास का द्वार खुलता है। इस प्रकार से प्रभावित बालक सम्भवतः पुराने विचारों और बंधनों से इतने अधीर हो सकते हैं, जितने कि पूर्व पीढ़ियों के लोग भी नहीं थे।

There are boys, however, on whom the education and independence of today are having a deeper effect. The intellectual qualities and sympathies of such boys being largely developed, welcome the freedom that they enjoy. This they do, not from the stand point of amusement or pleasure, but from the prospect it opens up to them of wider and deeper life, in which their mental powers may find an outlet. Boys so influenced may probably be more impatient of old fashioned opinions and restraint that those of a former generation.

5. भारत एक कृषि- प्रधान देश है। इस के सत्तर प्रतिशत से भी अधिक आदमी कृषि पर निर्भर करते हैं। भारतवर्ष एक वृक्ष है, कृषि उसकी जड़ है, आबादी उसका तना है और उद्योग तथा व्यवसाय उसकी डालें एवं पत्तियाँ हैं। यदि हम वृक्ष की जडों को सींचते नहीं तो वह सूख जायेगा और अन्त में गिर पड़ेगा। इसका अर्थ यह है कि कृषि की ओर ध्यान न देना देश के भविष्य की ओर ध्यान न देने के समान है। यह दुःख की बात है कि हमें प्रतिवर्ष खाने के लिए विदेशों से माँगना पड़ता है।

इसी कारण हमने पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि को उच्चप्राथमिकता दी है। प्रति एकड़ उपज बढ़ाने के लिए अनेक उपाय किये गये हैं। सहकारी खेती उन्हीं उपायों में से एक है।

India is chiefly an agricultural country. More than seventy percent of its population depends upon agriculture. India is a tree, Agriculture is root, the population is its trunk and industry and commerce are its branches and leaves. If we do not water its roots, it will dry up, and will at last fall down. It means that, to neglect agriculture is to be indifferent to the future of the country. It is a said thing that every year we have to import food grains for our consumption from foreign countries.

For this reason we have given the top priority to agriculture in our five year plans. Several measures have been adopted to increase the output per acre. Co-operative farming is one such measure.

6. मुझे नयी भाषायें सीखने का शौक है। यह शौक मैं अपने माता-पिता से ग्रहण किया है। मैं नई भाषायें सीखना चाहता हुँ। मैं अपना समय व्यर्थ नहीं करता। मैं खानी समय में शब्दकोश के पन्ने पलटता हूँ। किन्तु शब्दकोश नई भाषा नहीं सिखाता। भाषा का उचित प्रयोग केवल पुस्तकों से सीखना सम्भव नहीं। उसके लिये तो भाषा विशेष में बोलचाल करना आवश्यक है।

I am interested in learning new languages. I have inhabited this interest from my parents. I am anxious to learn new languages. I do not waste my time. In spare moments I turn the pages of dictionary, but a dictionary cannot teach a new languages. One cannot learn the use of language through the study of books only. For this, it is essential to talk that very language.

7. एक रचनाकार के व्यक्तित्व का पहचान उनके नाटकों और कविताओं से मिलते है। उनके मनोविकार उनकी सूची, समाज के प्रति उनकी दृष्टि, से सब का परिचय उनकी कविता और नाटकों में मिलते है। कवि बहुत सारी रचनाओं के रचनाकार होने पर उनके व्यक्तित्व आसानी से उनके नाटकों से पिरचित होते। यह कथन संस्कृत के विख्यात नाटकार भास के बारे में बिलकुल सच है।

The personality of an author is found to underlie his dramas or poems. His mental make up his tastes and his worldly knowledge; all these final place in his poems and drams. Even here if the poet happens to be the author of several works, his personality is more easily discernible in his dramas. This is found to be very true in the case of Bhasa, the immortal Sanskrit Dramatist.

8. संसार में होनेवाले सभी घटनाएँ अखबार के द्वारा हम प्राप्त कर सकते है । महत्वपूर्ण घटनाओं को थोडी समय के अंदर हम प्राप्त कर सकते है । जापान में हुए भूकंप या अकाल, या किसी रेल दुर्घटना, जो आस्ट्रेलिया में हुई थी, पत्र के द्वारा हम पढ सकते है । विभिन्न देश के लोगों के बीच सहकारिकता का भाव बनाये रखने केलिए पत्र सहायक होती है । आज दुनिया में समाचार पत्र का महत्वपूर्ण स्थान है ।

राष्ट्र के सभी घटनाओं का विवरण अखबार हमें देते है । दिल्ली संसद में जो कुछ घटनाएँ घटित है उनका विवरण हमें पत्र के द्वारा प्राप्त कर सकते है। किसी जगह में आग जल रही है या किसी स्थान में तेज़ तूफान चली आ रही है पत्र के द्वारा हम इसका खबर प्राप्त कर सकते हैं।

The news paper tells us what is happening all over the world. With in a very few hours of any great event, we can read about it in news paper. If there is a famine or an earthquake in japan or a Railway accident in Australia we heard about it in the newspaper. The newspaper help to keep the people of different countries in class touch with each other. They play an important part in the world day.

The newspaper tells as what is happening in our country. It tells us what parliament is done at Delhi. When there is a big fire or a heavy storm some were the newspaper tells as about it.

UNIT - 28

अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद

1. Human society has intimate relationship with crow. There are so many stories tells about crow. There are somany references to crows in folktiles. It could be true or false. It is believed that crow predict different event by his peculiar words.

The crow is found everywhere in India, plains as well as in mountain areas of India. In Sikkim crow had seen 13-14 thousand feet height. In India there are only two places were the crow had not seen. They are Kodaikanal in South India as Chithrakoodam in North India. But the reason is unknown.

मानव जीवन में कौए को महत्वपूर्ण स्थान है । कौए के संबंध में हमारे बीच तरह तरह की कथाएँ प्रचलित है । लोकगीतों में भी इसके बारे में तरह तरह का उल्लेख है तथा इसके बारे में सही या गलत धारणाएँ फैली हुई है । कहते है जब कोई आनेवाला होता है तो कौए दरवाज़े पर आकर बोलता है । इसी तरह विश्वास किया जाता है कि आगे होनेवाली घटनाओं की सूचना भी वह देता है ।

कौए भारत के प्रायः सभी हिस्सों में पाये जाते है । मैदान में ही नही पहाडी क्षेत्रों में भी उसे देख सकते है । सिक्किम में 13-14 हज़ार फुट की उँचायी पर ये पायी जाती है । इस देश में केवल दो ही स्थान ऐसे है, जहाँ कौए नहीं होते । दक्षिण भारत में कोटैकनाल तथा उत्तर में चित्रकूट । पता नहीं उसका कारण क्या है ।

2. Taj Mahal is an uncommon attempt to immortalize love. Today the Idol lover Shahjahan is not alive, the Idol of beauty Mumthas is not alive, their power and glory are not alive, but yet all this seem to be alive in the stories with which the Taj mahal has been built. Thousands of tourist gather their, every year to have a glance of Indias architectural skills and return home with associated joy. In every noke of this musolium are sold, which attract tourist from far and near to this place. The Tajmahal stands in the historic city of Agra in Uttarpradesh. It was beautiful garden on three sides, and on the forth flows river Yamuna. Within the fort there is a small mirror where in one can see reflection of the Taj.

अनुपम प्रेम का असाधारण प्रयत्न है ताजमहल। आज उस पूजनीय प्रेमी शाहजहाँ या आराध्य सुंदरी मुमताज़ या उसके शक्ति व विजय भी साथ नहीं, फिर भी यह सब ताजमहल के द्वारा अब भी जीवित है । हर साल हज़ारों यात्रियाँ यहाँ एकत्रित होते है और भारत के शिल्प वैदग्य देखकर आनंदित होकर घर चला जाता है । संसार के कोने कोने में इस कब्र का चित्र बेचते है, जो दूर के यात्रियों को भी यहाँ आकृष्ट कराते हैं । उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक नगर आग्रा में ताजमहल स्थित है । तीनों भागों में सुंदर बगीचे है, और चौथे भाग में यमुना बहती है । किले के अंदर एक छोटा दर्पण है, जिसमें ताज की छाया देख सकते है।

3. 15th August is the day of our national festival. We got independence on that day. Several other countries in the world also fight for freedom in those countries fighting was bloody. The winner and the looser became enemies for ever. But our freedom movement was non violent in nature. After this movement centuries old enemies became friends. Therefore there is a special significance for our freedom celebration.

In independence every Indians decorate our houses and hoist the national flag on their houses. Towns and villages, schools and colleges, market, and officers are also decorated. We can see tri-coloured national flag everywhere. In delight of independence sweets are distributed in schools and common places and delighted festivel are organized corner meeting are held in various places in the evening. We remember our leaders who led the freedom struggle and we offer prayers who sacrificed their lives for freedom.

पन्द्रह अगस्त हमारे कौमी त्योहार का दिन है । उस दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ था । संसार में कई अन्य देशों भी आज़ादी केलिए लडाइयाँ लडी और खून की नदियाँ बही । जीतनेवाले और हारनेवाले हमेशा केलिए दुशमन हो गया। मगर हमारे देश की आज़ादी की लडाई अहिंसा की लडाई थी। इस लडाई के बाद शतियों के दुश्मन, दोस्त बन गये । इसलिए हमारी आज़ादी में खुशियों का गंध है।

स्वतंत्रता दिवस के दिन हर भारतवासी अपने घर को सजाता है और घर पर राष्ट्रीय झंडा फहराता है । शहर और गाँव, स्कूल और कॉलज, बाज़ार और दफतर सजाए जाते है । जहाँ देखो, वहाँ तिरंगे झंडे नज़र आती है । आज़ादी की खुशी में स्कूलों में और आम जगहों में मिठाइयाँ बाँटी जाती है और खुशी के जलसा बनायी जाती है । श्याम के वक्त स्थान-स्थान पर आम सभाएँ होती है । स्वतंत्रता की लडाई (संग्राम) युद्ध में जिन्होने अपने प्राण अर्पित कर दिये उन शहीदों की याद करते है और उनपर श्रद्धा को फूल चढाते है ।

4. Every Indian must have heard of the great Bengal poet Raveendranath Tagore. He was born in 16th May 1861. He belonged to a family of poets and artists of Bengal. When he was young his mother died and he was brought up by his father and the faithful servants of the family. Every one loved little Tagore and believed that he would one day be great.

Tagore was sent to school. But for some reason he did not like going to school. He loved to look at beautiful natural scenery, Mountains, lakes rivers and forest had great charm for him. They seemed to tell Tagore more than books could tell him. His father knew how much the young Tagore enjoyed mountains scenery. So he used to take the boy with him, whenever he went to the Himalayas. The knowledge that Tagore gained during the tour helped him to write beautiful Bengali songs and stories. Many of his poems and stories have been translated into English and other European languages.

सभी भारतीय रवीन्द्रनाथ ठागुर के बारे में सुना होगा जो बंगाली भाषा के महान कवि थे । सोलह मई अठारह सौ इकसठ में उनका जन्म हुआ। उनका संबंध बंगाल कवि और कलाकारों के परिवार से था ।

बाल्यकाल से ही माता की मृत्यु हो गयी थी । इसलिए परिवार के विश्वस्थ सेवक तथा पिता ने उनका पालन पोषण किया । सभी लोग बच्चा टागुर को प्यार करते थे और विश्वास करते थे कि वह एक दिन महान बनेंगे।

ठागुर को स्कूल भेजा गया । लेकिन किसी न किसी कारण से स्कूल जाना वह पसंद नहीं करते थे । वे प्राकृतिक सुंदर दृश्यों को देखना पसंद करते थे। पहाडों,झीलों,नदियों और जंगलों उन्हें कमनीय लगता था । पुस्तकों से अधिक ज्ञान उन्हें यहाँ से मिलते थे । उनके पिता जानते थे कि ये प्राकृतिक दृश्य उन्हें किस तरह संतुष्ट करते है । इसलिए वे जब कभी हिमालय के पास जाते है तब ठागुर को भी साथ ले जाते थे । इन यात्राऐं ठागुर को सुंदर बंगाली गीतों तथा कहानियों की रचना का सहायक बनी। उनके अधिकतम कविताऐं और कहानियाँ अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा में अनूदित किया है ।

5. Advertising has been differently defined by different people. It is said to be nothing but purely and simply salesmanship in print. Dr.Jones defines it as a sort of machine-made, mass-production method of selling, which supplements the voice and personality of the individual salesman, much as in manufacturing the machine supplements the hands of the craftsman. Simply stated, advertising is the art of influencing human action, the awakening of the desire to possess, and possess your product.

विज्ञापन की विभिन्न लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषा की है । यह स्पष्ट और सरल रूप में विक्रय कला के मुद्रित रूप के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । डॉ . जान्स के अनुसार यह उत्पादन को बहुत बडी मात्रा में बेचने की एक मशीन है, जो एक विक्रय कर्ता की वाणी और व्यक्तित्व की कमी को उसी प्रकार पूरा करती है, जिस प्रकार उत्पादन कार्य में मशीन दस्तकार के हाथों की कमी को पूरा करती है। सरल रूप में कहे तो विज्ञापन मनुष्य को कार्य करने केलिए प्रेरित करने, उसमें वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा पैदा करने और उस वस्तु को रखने की इच्छा पैदा करने की कला है।